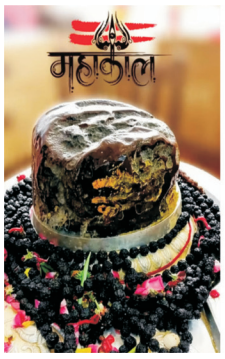

साप्ताहिक

अचलेश्वर एक्सप्रेस

संपादक : आकाश कुशवाहः- 8435500216 | वर्ष-1 अंक-02 | ग्वालियर, सोमवार 31 अगस्त 2026 | पृष्ठ 8, मूल्य 2 रुपया | RNI No. - MPHIN/26/A/7091

शीतला रोड पर RTO का 'वसूली सिंडिकेट'? सड़क पर कानून चलता है या कैश का खेल!

अचलेश्वर एक्सप्रेस

ग्वालियर। शीतला रोड जहां कागजों में परिवहन जांच होती है, लेकिन सड़क पर ट्रक चालकों के बीच एक अलग ही चर्चा है। आरोप है कि यहां वाहन रोकने का मकसद नियमों की जांच से ज्यादा कथित नकद वसूली बन चुका है। कई चालकों का दावा है कि पहले गाड़ी रोको, फिर कागजों में कमी निकालो और उसके बाद शुरू होता है 'सेटिंग' का खेल। सवाल यह है कि अगर सब कुछ कानून के मुताबिक हो रहा है तो चालान मशीन से कटने के बजाय नकद पैसों की चर्चा क्यों होती है?

मोहन सरकार ने चेकपोस्ट बंद किए फिर शीतला रोड पर यह 'कैश कलेक्शन पॉइंट' क्यों?

RTO कार्यालय है या दलालों का कंट्रोल रूम? आखिर किसके इशारे पर चल रहा है पूरा खेल?

सबसे गंभीर आरोप यह है कि सड़क पर कुछ कथित दलाल खुलेआम सक्रिय दिखाई देते हैं। चालक कहते हैं कि अधिकारी तक पहुंचने से पहले ही 'काम कराने वाले' लोग सामने आ जाते हैं। अगर यह सच है तो बड़ा सवाल खड़ा होता है क्या सरकारी कार्रवाई अब बिचौलियों के भरोसे चलेगी? क्या वरिष्ठ अधिकारियों को यह सब दिखाई नहीं देता, या फिर सब कुछ उनकी नाक के नीचे हो रहा है?

मोहन सरकार ने चेकपोस्ट बंद किए फिर शीतला रोड पर यह 'कैश कलेक्शन पॉइंट' क्यों?

सरकार ने भ्रष्टाचार रोकने के लिए परिवहन चेकपोस्ट बंद किए थे। बॉडी कैमरा, क्यूआर मशीन और डिजिटल चालान जैसी व्यवस्था लागू की गई। लेकिन अगर आज भी ड्राइवर कथित नकद वसूली की शिकायत कर रहे हैं, तो सवाल सीधे व्यवस्था पर उठता है। आखिर कैमरे क्या रिकॉर्ड कर रहे हैं? क्यूआर मशीनें कहां हैं? और सरकारी खाते में कितना पैसा जमा हो रहा है?

अगले अंकों में बड़ा खुलासा! शीतला रोड पर ट्रक चालकों से कथित वसूली का खेल—स्टिंग में क्या बोले ड्राइवर, किसके संरक्षण में चल रहा 'कैश कलेक्शन'?

अचलेश्वर एक्सप्रेस के अगले अंकों में देखिए शीतला रोड पर परिवहन जांच को लेकर सामने आए गंभीर आरोपों की पड़ताल। ड्राइवरों ने कैमरे के सामने क्या बताया? चेकिंग के नाम पर कथित तौर पर कितनी रकम मांगे जाने के आरोप हैं? मौके पर कौन-कौन सक्रिय है और इस कथित वसूली व्यवस्था के पीछे किसका संरक्षण होने के सवाल उठ रहे हैं? स्टिंग और ग्राउंड रिपोर्ट में सामने आए दावों की पूरी कहानी—अगले अंक में।

800 मीटर लंबा ग्लेशियर टूटने से तबाही आई

नेपाल बाढ़ में मौत का आंकड़ा 682 हुआ, 287 भारतीयों समेत तीन हजार लापता

अचलेश्वर एक्सप्रेस

काठमांडू। नेपाल-तिब्बत में 26 अगस्त को आई बाढ़ में मरने वालों का आंकड़ा 682 हो गया है। करीब 3,000 लोग अब भी लापता हैं। इनमें 287 भारतीय भी शामिल हैं।इस तबाही के तीन दिन बाद ग्लेशियर टूटने का वीडियो सामने आया है। तिब्बत में एक टूर गाइड ग्रुप ने ऊंचाई से इसे रिकॉर्ड किया था। वीडियो में बर्फ और चट्टानों से बना करीब 800 मीटर लंबा ग्लेशियर का हिस्सा टूटकर घाटी में गिरता दिखाई दे रहा है।

ग्लेशियर टूटने के बाद बड़े पैमाने पर मलबा और पानी नीचे की ओर बहा। इसके साथ भूस्खलन हुआ और अचानक आई बाढ़ ने नेपाल-तिब्बत सीमा से लगे इलाकों में भारी तबाही मचाई। बाढ़ के बाद नेपाल और चीन में राहत-बचाव अभियान जारी है।

त्रिशूली हाइड्रोपावर सुरंग की ड्रिलिंग में कामयाबी

नेपाल के नुवाकोट स्थित त्रिशूली-3 'ए' हाइड्रोपावर प्रोजेक्ट की मलबे में दबी सुरंग में रेस्क्यू टीम को ड्रिलिंग के दौरान शुरुआती कामयाबी मिली है। सुबह से सुरंग में जमा मिट्टी और मलबा हटाने के लिए ड्रिलिंग की जा रही थी। अब टीम सुरंग के ऊपरी हिस्से 'क्राउन' तक पहुंच गई है। इसके बाद ड्रिल किए गए हिस्से से कैमरा और ऑक्सीजन अंदर भेजी जा रही है। कैमरे से सुरंग के भीतर की स्थिति का पता लगाया जाएगा, जबकि ऑक्सीजन के जरिए अंदर फंसे लोगों तक राहत पहुंचाने की कोशिश की जा रही है।

287 भारतीय अभी भी लापता

नेपाल में इस आपदा से 675 लोगों की मौत हो चुकी है, जबकि तिब्बत में 7 लोगों की मौत की पुष्टी की गई है। करीब 3000 लोग लापता हैं। इनमें 187 भारतीय भी शामिल हैं। 400 भारतीय अभी तिब्बत में फंसे हुए हैं।

त्रिशूली में फंसे बिहार के परिवार को नेपाली सेना ने बचाया

बिहार के मोतिहारी जिले के एक परिवार के 7 सदस्यों को नेपाली सेना ने त्रिशूली से सुरक्षित निकाल लिया। परिवार के सदस्य गणेश ठाकुर ने बताया कि इलाके में तेज तूफान के बाद वे फंस गए थे। उन्होंने कहा कि परिवार के सभी लोग सुरक्षित हैं। गणेश ठाकुर के मुताबिक, बाढ़ में 100 से ज्यादा लोग बह गए और बचाव अभियान में शामिल कुछ लोग भी इसकी चपेट में आ गए। उन्होंने बताया कि परिवार किसी तरह वहां से निकल पाया। नेपाली सेना का राहत और बचाव अभियान अभी जारी है।

भाजपा अध्यक्ष ने दिल्ली के 3 सांसदों को फटकार लगाई

नई दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के अध्यक्ष नितिन नबीन ने बीजेपी दिल्ली के 3 सांसदों को पूर्व कांग्रेस सांसद सज्जन कुमार के परिवार के घर जाकर शोक व्यक्त करने के लिए फटकार लगाई है। हाल ही में सांसद कमलजीत सहरावत, रामवीर सिंह बिधूड़ी और योगेंद्र चंदोलिया ने सज्जन कुमार के आवास का दौरा कर उनके परिवार के सदस्यों से मुलाकात की थी। पार्टी सूत्रों के अनुसार, भाजपा अध्यक्ष ने इस कदम पर नाराजगी व्यक्त की।

सज्जन कुमार का 20 अगस्त को निधन हो गया था। वे 1984 में तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की हत्या के बाद हुए सिख विरोधी दंगों के दौरान सिखों की हत्याओं के लिए दो आजीवन कारावास की सजा काट रहे थे। तीनों नेताओं के सज्जन कुमार के आवास पर जाने के बाद सबसे पहली प्रतिक्रिया भाजपा नेता एचएस फुल्का की ओर से आई थी। उन्होंने कहा था कि बीजेपी नेताओं का यह दौरा विशेष रूप से आपत्तिजनक था। क्योंकि भाजपा ने लगातार सिख विरोधी दंगों के पीड़ितों के न्याय के संघर्ष का समर्थन किया था और पीड़ितों के परिवारों द्वारा कुमार को जेल में ही रखने के प्रयासों का समर्थन किया था।

सीसीटीवी ने खोला एटीएम चोरी की कोशिश का राज

अचलेश्वर एक्सप्रेस

ग्वालियर। बहोड़ापुर थाना क्षेत्र के आनंद नगर तिराहे पर देर रात दो एटीएम में चोरी की कोशिश करने वाले आरोपी को पुलिस ने सीसीटीवी फुटेज की मदद से चंद घंटों के भीतर गिरफ्तार कर लिया। आरोपी ने एसबीआई और बैंक ऑफ बड़ौदा के एटीएम के लोअर गेट खोलकर अंदर घुसने और चोरी करने का प्रयास किया था। हालांकि, एटीएम से रकम चोरी होने से पहले ही पुलिस ने आरोपी की पहचान कर उसे पकड़ लिया।

बहोड़ापुर पुलिस ने चंद घंटों में आरोपी दबोचा

रात 2:15 बजे मिली ATM में छेड़छाड़ की सूचना

29 अगस्त की रात करीब 2.15 बजे एटीएम की देखरेख करने वाली एजेंसी के कर्मचारी दीपक शर्मा को मुंबई स्थित एसबीआई हेडक्वार्टर से सूचना मिली कि आनंद नगर तिराहे पर स्थित एसबीआई एटीएम में कोई व्यक्ति छेड़छाड़ कर रहा है। सूचना मिलते ही वह मौके पर पहुंचे। जांच में एसबीआई एटीएम के लोअर गेट के साथ ही पास स्थित बैंक ऑफ बड़ौदा के एटीएम के लोअर गेट को भी खोलने का प्रयास सामने आया। दोनों एटीएम में चोरी की नीयत से छेड़छाड़ की गई थी। शिकायत पर बहोड़ापुर पुलिस ने अपराध क्रमांक 325/26, धारा 305(ए), 62 बीएनएस के तहत मामला दर्ज कर आरोपी की तलाश शुरू की।

इनकी रही सराहनीय भूमिका

कार्रवाई में थाना प्रभारी बहोड़ापुर निरीक्षक आलोक सिंह परिहार, उप निरीक्षक देवेन्द्र लोधी, उप निरीक्षक रामचंद्र शर्मा, प्रधान आरक्षक सीताराम तोमर, आरक्षक धर्मपाल तोमर, योगेन्द्र तोमर, बृजकिशोर भदौरिया, सचिन सिकरवार, नागर गुर्जर और संतोष वर्मा सहित सीसीटीवी टीम के प्रधान आरक्षक रामबरन लोधी तथा आरक्षक अनुज जाट, योगेन्द्र सिंह गुर्जर, अंकित मलिक, विकाश माहौर और प्रमोद पाल की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

सैकड़ों सीसीटीवी फुटेज खंगाले, संदिग्ध की पहचान हुई

मामले की गंभीरता को देखते हुए वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक ग्वालियर धर्मवीर सिंह ने अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक सुजावल जग्गा को थाना बहोड़ापुर और तकनीकी सेल की टीम गठित कर आरोपी की गिरफ्तारी के निर्देश दिए। सीएसपी कृष्ण पाल सिंह के मार्गदर्शन और थाना प्रभारी निरीक्षक आलोक सिंह परिहार के नेतृत्व में पुलिस टीम ने घटनास्थल और आसपास के इलाकों के सैकड़ों सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाली। फुटेज के आधार पर संदिग्ध की पहचान घासमंडी निवासी मनोज पाल (26) के रूप में हुई। मुखबिर से मिली सूचना के आधार पर पुलिस ने दबिश देकर उसे चंद घंटों में गिरफ्तार कर लिया। पूछताछ में आरोपी ने दोनों एटीएम के लोअर गेट खोलकर चोरी का प्रयास करना स्वीकार किया है। पुलिस आरोपी से आगे पूछताछ कर रही है।

अचलेश्वर एक्सप्रेस की खबर के बाद सांसद का कदम बना चर्चा का विषय, जनता पूछ रही–मैदान में सांसद कब दिखेंगे?

खबर से उठे सवालों के बीच सांसद ने नगर निगम में नियुक्त किया प्रतिनिधि, सोमवार का अंक आने से पहले सामने आई नई कवायद

अचलेश्वर एक्सप्रेस

ग्वालियर। बारिश के दौरान शहर की बदहाल सड़कों, जलभराव और चरमराई जल निकासी व्यवस्था को लेकर डिजिटल प्लेटफॉर्म अचलेश्वर एक्सप्रेस द्वारा सांसद भारत सिंह कुशवाह की भूमिका पर सवाल उठाए जाने के बाद अब नगर निगम की बैठकों में उनके प्रतिनिधित्व के लिए भाजपा के वरिष्ठ नेता ओमप्रकाश जाजोरिया की नियुक्ति चर्चा का विषय बन गई है। खास बात यह है कि यह नियुक्ति उस समय सामने आई है, जब अचलेश्वर एक्सप्रेस ने डिजिटल प्लेटफॉर्म पर सवाल उठाने के बाद सोमवार के अंक में पूरे मामले को विस्तार से प्रकाशित करने की तैयारी की थी। सांसद की ओर से जारी नियुक्ति पत्र में कहा गया है कि पूर्व निर्धारित कार्यक्रमों एवं व्यस्तताओं के कारण वे नगर निगम की बैठकों में लगातार उपस्थित नहीं हो पाते हैं। इसी वजह से श्री जाजोरिया को सांसद प्रतिनिधि बनाया गया है। हालांकि, जनता के बीच सवाल यह है कि नगर निगम की बैठकों में प्रतिनिधि की मौजूदगी अपनी जगह है, लेकिन बारिश के दौरान जलभराव से जूझती जनता के बीच सांसद की प्रत्यक्ष मौजूदगी का विकल्प क्या है? शहर की सड़कों पर पानी, बंद नालियां, बाधित निकासी और आम नागरिकों की परेशानियां केवल बैठकों का विषय नहीं, बल्कि जमीन पर दिखाई देने वाली समस्याएं हैं। ऐसे में नियुक्ति के समय को लेकर सवाल उठना स्वाभाविक है कि क्या यह सामान्य प्रशासनिक व्यवस्था है या उठ रहे सवालों के बीच सांसद की भूमिका को लेकर सामने आई प्रतिक्रिया?

जनता की परेशानी बैठक की टेबल तक नहीं, सड़कों पर दिखाई देती है

बारिश के दिनों में ग्वालियर के कई हिस्सों में जलभराव और यातायात संबंधी परेशानियां सामने आती रही हैं। ऐसे समय में आम नागरिक की अपेक्षा रहती है कि उसके चुने हुए जनप्रतिनिधि मौके पर पहुंचकर स्थिति देखें, संबंधित अधिकारियों से जवाब लें और समस्या के स्थायी समाधान के लिए दबाव बनाएं। नगर निगम की बैठक में किसी प्रतिनिधि की मौजूदगी निश्चित रूप से जनहित के मुद्दों को उठाने का माध्यम हो सकती है, लेकिन जनता का सवाल इससे आगे है। लोग जानना चाहते हैं कि उनके इलाके में पानी क्यों भर रहा है, नालियों की सफाई क्यों नहीं हुई, जल निकासी की व्यवस्था कहां बाधित है और जिम्मेदार विभाग समस्या का समाधान कब करेगा। अचलेश्वर एक्सप्रेस की पिछली डिजिटल खबर का मूल सवाल भी यही था कि यदि सांसद व्यस्तताओं के कारण मौके पर नहीं पहुंच पा रहे हैं, तो कम से कम अधिकारियों की बैठक बुलाकर शहर का हाल क्यों नहीं जाना जा सकता? अब प्रतिनिधि नियुक्त किए जाने के बाद यह सवाल और महत्वपूर्ण हो गया है कि क्या सांसद स्वयं इन समस्याओं की निगरानी करेंगे या नगर निगम की बैठकों तक अपनी जिम्मेदारी प्रतिनिधि के माध्यम से सीमित रखेंगे?

प्रतिनिधि नियुक्त हुआ, लेकिन जनता के सवाल वहीं खड़े हैं

सांसद भारत सिंह कुशवाह द्वारा श्री ओमप्रकाश जाजोरिया को नगर निगम परिषद एवं अन्य बैठकों में प्रतिनिधित्व के लिए नियुक्त किए जाने से एक व्यवस्था जरूर बनाई गई है, लेकिन इससे जनता की मूल समस्याओं का समाधान अपने आप नहीं होने वाला। जलभराव की समस्या के लिए नालों की सफाई, जल निकासी की प्रभावी व्यवस्था, सड़कों की स्थिति की निगरानी और संबंधित अधिकारियों की जवाबदेही जरूरी है। प्रतिनिधि बैठकों में सांसद का पक्ष रख सकते हैं, विकास कार्यों और जनहित के मुद्दों को उठा सकते हैं, लेकिन शहर की जनता यह भी देखना चाहेगी कि इन बैठकों के बाद जमीन पर कितना बदलाव आता है। सवाल यह भी है कि क्या सांसद प्रतिनिधि की नियुक्ति के साथ ग्वालियर में बारिश से जुड़ी समस्याओं की नियमित समीक्षा होगी? क्या प्रभावित क्षेत्रों की सूची तैयार होगी? क्या अधिकारियों से समयबद्ध समाधान मांगा जाएगा? और क्या सांसद स्वयं इसकी मॉनिटरिंग करेंगे? जनता को केवल यह बताना पर्याप्त नहीं कि सांसद व्यस्त हैं। जनता यह जानना चाहती है कि उनकी परेशानियों को दूर करने के लिए जिम्मेदारी किस स्तर पर और कितनी गंभीरता से निभाई जा रही है।

सोमवार का अंक आने से पहले नियुक्ति, अब जवाबदेही पर नजर

अचलेश्वर एक्सप्रेस ने डिजिटल प्लेटफॉर्म पर सवाल उठाने के बाद सोमवार के अंक में इस पूरे मामले को विस्तार से प्रकाशित करने की तैयारी की थी। इसी बीच सांसद प्रतिनिधि की नियुक्ति सामने आने से राजनीतिक और जनचर्चा का एक नया विषय जरूर बन गया है। नियुक्ति पत्र में सांसद की व्यस्तताओं का उल्लेख है, इसलिए इस कदम को आधिकारिक रूप से बैठकों में प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने की व्यवस्था बताया गया है। लेकिन खबर और नियुक्ति के बीच सामने आए समय को लेकर जनता सवाल जरूर कर रही है। क्या सांसद अब अधिकारियों से ग्वालियर की बारिश और जलभराव की स्थिति की नियमित जानकारी लेंगे? क्या वे प्रभावित इलाकों का दौरा करेंगे? क्या नगर निगम और प्रशासन से जवाब मांगेंगे? यही वे सवाल हैं जिनका जवाब आने वाले दिनों में उनकी भूमिका से मिलेगा। किसी जनप्रतिनिधि की जिम्मेदारी केवल बैठकों में उपस्थिति तक सीमित नहीं होती; जनता के बीच मौजूद रहना और समस्याओं के समाधान के लिए प्रशासन पर प्रभावी दबाव बनाना भी उसकी राजनीतिक जवाबदेही का हिस्सा है। इसलिए प्रतिनिधि की नियुक्ति के बाद असली परीक्षा अब शुरू होती है।

जनता को प्रतिनिधि नहीं, परिणाम चाहिए

ग्वालियर की जनता के लिए सबसे महत्वपूर्ण सवाल किसी नियुक्ति का नहीं, बल्कि नतीजे का है। शहर में बारिश होती है तो सड़कें जलमग्न न हों, जल निकासी बाधित न हो, लोगों को घरों और दुकानों से निकलने में परेशानी न हो और यातायात व्यवस्था प्रभावित न हो–जनता की अपेक्षा इतनी ही है। सांसद प्रतिनिधि के रूप में ओमप्रकाश जाजोरिया की नियुक्ति के बाद अब उनसे भी उम्मीद रहेगी कि वे नगर निगम की बैठकों में ग्वालियर की जनता की आवाज मजबूती से उठाएं और बैठक के फैसलों को जमीन तक पहुंचाने में भूमिका निभाएं। लेकिन इसके साथ सांसद भारत सिंह कुशवाह की जवाबदेही भी बनी रहेगी। अचलेश्वर एक्सप्रेस का सवाल किसी व्यक्ति विशेष से अधिक उस व्यवस्था से है, जिसमें जनता परेशानी में हो और जनप्रतिनिधि की भूमिका पर सवाल खड़े हों। यदि नियुक्ति के बाद जलभराव, सड़क और निकासी की समस्याओं पर ठोस कार्रवाई होती है तो जनता उसका स्वागत करेगी। लेकिन यदि प्रतिनिधि नियुक्ति केवल बैठकों में औपचारिक प्रतिनिधित्व तक सीमित रह जाती है और जमीन पर वही समस्याएं बनी रहती हैं, तो सवाल फिर वही रहेगा ग्वालियर की जनता के बीच उसका सांसद कब दिखाई देगा?

निर्माणाधीन मकान में सजा था जुए का फड़, 11 जुआरी गिरफ्तार

अचलेश्वर एक्सप्रेस

ग्वालियर। मुरार थाना पुलिस ने जुआरियों के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान के तहत पंछी नगर, बड़ागांव क्षेत्र में बड़ी कार्रवाई करते हुए 11 जुआरियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस के अनुसार, निर्माणाधीन मकान के एक कमरे में आरोपी ताश के पत्तों पर हार-जीत का दांव लगाकर जुआ खेल रहे थे। मुखबिर से सूचना मिलने के बाद वरिष्ठ अधिकारियों को इसकी जानकारी दी गई, जिसके बाद पुलिस टीम ने मौके पर पहुंचकर घेराबंदी की और जुआ खेल रहे आरोपियों को पकड़ लिया। कार्रवाई के दौरान पुलिस ने जुए के फड़ से कुल 52,700 रुपये नकद और एक ताश की गड्डी बरामद की। पकड़े गए आरोपियों की पहचान वीरेंद्र पाल, ज्ञानेंद्र कुशवाहा, आकाश यादव, हेम कुमार पाल, मोनू खटीक, मेहताब यादव, दीवान यादव, गौरव प्रजापति, अमर सिंह जाटव, चिन्मय कुशवाहा और कमलेश उर्फ करुआ यादव के रूप में हुई है। पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ धारा 13 जुआ एक्ट के तहत प्रकरण दर्ज कर वैधानिक कार्रवाई शुरू कर दी है।

मुरार पुलिस ने पंछी नगर-बड़ागांव में दबिश देकर 52,700 रुपये नकद और ताश की गड्डी की जब्त

पुलिस टीम की सतर्कता से कार्रवाई सफल

मुरार पुलिस की इस कार्रवाई में थाना प्रभारी निरीक्षक मैना पटेल, चौकी प्रभारी बड़ागांव उपनिरीक्षक राहुल अहिरवार, प्रधान आरक्षक नरवीर राणा, प्रधान आरक्षक घनश्याम जाट, आरक्षक संजय गुर्जर, आरक्षक देवेन्द्र साहू, आरक्षक सत्येन्द्र तोमर और आरक्षक जसवीर गुर्जर की सराहनीय भूमिका रही। पुलिस ने जुआ खेलने के लिए इस्तेमाल किए जा रहे स्थान से 52,700 रुपये और एक ताश की गड्डी जब्त की है। पुलिस का कहना है कि जुआ और सट्टे जैसी गतिविधियों पर अंकुश लगाने के लिए अभियान लगातार जारी रहेगा। कार्रवाई के बाद आरोपियों के खिलाफ थाना मुरार में धारा 13 जुआ एक्ट के तहत प्रकरण दर्ज किया गया है। पुलिस की इस कार्रवाई से क्षेत्र में जुआ खेलने वालों में हड़कंप की स्थिति बनी हुई है।

इनका कहना

वरिष्ठ अधिकारियों के निर्देश पर जुआरियों के खिलाफ लगातार कार्रवाई की जा रही है। पंछी नगर-बड़ागांव में निर्माणाधीन मकान पर दबिश देकर 11 जुआरियों को पकड़ा गया। मौके से 52,700 रुपये नकद और ताश की गड्डी जब्त की गई है। जुआ-सट्टे के खिलाफ कार्रवाई आगे भी जारी रहेगी।

मैना पटेल, टीआई, मुरार थाना

मुखबिर की सूचना पर घेराबंदी, मौके पर मिला जुए का फड़

पुलिस के मुताबिक, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक ग्वालियर धर्मवीर सिंह के निर्देश पर जिले में जुआरियों और सटोरियों के खिलाफ लगातार अभियान चलाया जा रहा है। इसी क्रम में मुरार पुलिस को सूचना मिली थी कि पंछी नगर, बड़ागांव स्थित एक निर्माणाधीन मकान में कुछ लोग रुपये-पैसों से हार-जीत का दांव लगाकर जुआ खेल रहे हैं। सूचना की तस्दीक के बाद अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक शहर मध्य/यातायात सुजावल जग्गा ने थाना प्रभारी मुरार को तत्काल कार्रवाई के निर्देश दिए। सीएसपी मुरार संदीप बांगरे के मार्गदर्शन में थाना प्रभारी निरीक्षक मैना पटेल के नेतृत्व में टीम मौके पर पहुंची। पुलिस ने मकान की घेराबंदी कर कमरे में दबिश दी, जहां आरोपी आमने-सामने बैठकर ताश के पत्तों से जुआ खेलते मिले। पुलिस ने सभी 11 आरोपियों को मौके से पकड़ लिया और उनके कब्जे से जुए में लगाई गई नकदी बरामद की।

एसएसपी धर्मवीर सिंह के निर्देश पर ताबड़तोड़ कार्रवाई, अलग-अलग थाना क्षेत्रों से अवैध हथियारों की बड़ी बरामदगी

12 बदमाश गिरफ्तार, 11 कट्टे-पिस्टल समेत जिंदा राउंड बरामद; जिलेभर में एक साथ कसा पुलिस का शिकंजा

अचलेश्वर एक्सप्रेस

ग्वालियर। जिले में अवैध हथियारों के साथ घूमने और सोशल मीडिया पर हथियारों का प्रदर्शन करने वाले बदमाशों के खिलाफ ग्वालियर पुलिस ने ऑपरेशन ईगल के तहत बड़ी कार्रवाई की है। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक धर्मवीर सिंह के निर्देश पर 29 और 30 अगस्त को जिले के अलग-अलग थाना क्षेत्रों में चलाए गए अभियान में पुलिस ने कुल 12 बदमाशों को गिरफ्तार कर 12 अवैध हथियार बरामद किए हैं। इनमें 315 बोर के 11 देशी कट्टे और एक 32 बोर पिस्टल शामिल है। पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से 18 जिंदा राउंड तथा एक खाली खोखा भी बरामद किया है। सभी आरोपियों के खिलाफ संबंधित थानों में आर्म्स एक्ट के तहत प्रकरण दर्ज कर वैधानिक कार्रवाई शुरू कर दी गई है।

संदिग्धों की निगरानी से लेकर गिरफ्तारी तक चला ऑपरेशन

ऑपरेशन ईगल के तहत पुलिस ने केवल सामान्य चेकिंग तक अभियान सीमित नहीं रखा, बल्कि संदिग्ध व्यक्तियों, आदतन बदमाशों और अवैध हथियार रखने वालों की निगरानी बढ़ाई गई। मुखबिर तंत्र को सक्रिय करने के साथ ही अलग-अलग थाना क्षेत्रों में पुलिस टीमों को लगाया गया। पुलिस के अनुसार संदिग्ध गतिविधियों की सूचना मिलते ही टीमों ने संबंधित स्थानों पर पहुंचकर घेराबंदी और कार्रवाई की। इस दौरान कई आरोपियों को मौके से अवैध हथियारों के साथ गिरफ्तार किया गया।

महाराजपुरा में दो अलग-अलग कार्रवाई, कट्टे और राउंड बरामद

ऑपरेशन ईगल की शुरुआत में महाराजपुरा थाना पुलिस ने 29 अगस्त को भदरौली पुराने रेलवे स्टेशन के पास सुसैरा कोठी रोड से स्कूटी सवार अजय सिंह लोधी को पकड़ा। पुलिस के अनुसार उसके कब्जे से 315 बोर का कट्टा और एक जिंदा राउंड बरामद हुआ। उसके पास से होण्डा एक्टिवा भी जब्त की गई। आरोपी के खिलाफ आर्म्स एक्ट की धाराओं में मामला दर्ज किया गया।

इसके बाद 30 अगस्त को महाराजपुरा पुलिस ने जीसी कॉलेज के पास रसलपुरा क्षेत्र से करण जाटव को गिरफ्तार किया। उसके कब्जे से 315 बोर का कट्टा और तीन जिंदा राउंड बरामद किए गए। इस कार्रवाई ने स्पष्ट किया कि महाराजपुरा क्षेत्र में अवैध हथियारों को लेकर पुलिस ने अलग-अलग स्थानों पर निगरानी बढ़ाई हुई थी।

मुरार में 19 वर्षीय युवक अवैध कट्टे के साथ पकड़ा गया

मुरार थाना पुलिस ने नदी पार संतर पर पुलिया के पास से 19 वर्षीय अंकित उर्फ अंकी परिहार को गिरफ्तार किया। पुलिस के अनुसार उसके कब्जे से 315 बोर का देशी कट्टा और एक जिंदा राउंड बरामद हुआ। आरोपी के खिलाफ आर्म्स एक्ट के तहत प्रकरण दर्ज किया गया। कम उम्र में अवैध हथियार के साथ पकड़े जाने का मामला पुलिस के लिए भी गंभीर संकेत माना जा रहा है।

पनिहार में चेकिंग के दौरान बाइक सवार दबोचा

पनिहार थाना पुलिस ने पवा-पावटा रोड पर चेकिंग के दौरान मोटरसाइकिल सवार मोनू गुर्जर को पकड़ा। पुलिस के अनुसार उसके पास से 315 बोर का कट्टा और एक जिंदा राउंड बरामद हुआ। इसके अलावा बिना नंबर की प्लेटिना मोटरसाइकिल और एक मोबाइल फोन भी पुलिस ने जब्त किया। आरोपी के खिलाफ आर्म्स एक्ट के तहत मामला दर्ज किया गया है।

उटीला में फरार आरोपी हथियार के साथ गिरफ्तार

उटीला थाना पुलिस ने एक अन्य कार्रवाई में अपराध क्रमांक 78/26 के फरार आरोपी देव उर्फ हरेन्द्र ओझा को पार्वती पहाड़ क्षेत्र से गिरफ्तार किया। पुलिस के अनुसार आरोपी के कब्जे से 315 बोर का कट्टा और एक जिंदा राउंड बरामद हुआ। फरार आरोपी के हथियार के साथ पकड़े जाने से पुलिस की निगरानी और मुखबिर सूचना तंत्र की भूमिका सामने आई।

डबरा देहात में भी अवैध हथियार के साथ गिरफ्तारी

डबरा देहात थाना पुलिस ने कंचनपुरा रोड स्थित मंगरौरा तिराहे से गुलशन पवार को गिरफ्तार किया। पुलिस के अनुसार उसके कब्जे से 315 बोर का कट्टा और एक जिंदा राउंड बरामद हुआ। आरोपी के खिलाफ आर्म्स एक्ट के तहत प्रकरण दर्ज कर जांच शुरू कर दी गई है।

पुरानी छावनी और गोला का मंदिर में भी कार्रवाई

पुरानी छावनी थाना पुलिस ने ग्राम बीलपुरा की पुलिया से 19 वर्षीय अमन होलकर को गिरफ्तार किया। उसके कब्जे से 315 बोर का कट्टा और एक जिंदा राउंड बरामद हुआ।

इसी तरह गोला का मंदिर थाना पुलिस ने बिरला नगर पुल के नीचे से अमन शर्मा को पकड़ा। पुलिस के अनुसार उसके पास भी 315 बोर का देशी कट्टा और एक जिंदा राउंड मिला। दोनों मामलों में आरोपियों के खिलाफ आर्म्स एक्ट के तहत कार्रवाई की गई।

झांसी रोड में पुराने ईंट भट्टे के पास हथियार बरामद

झांसी रोड थाना पुलिस ने नीडम पुल के पास पुराने ईंट भट्टे के नजदीक से नकुल परिहार को गिरफ्तार किया। पुलिस के अनुसार आरोपी के कब्जे से 315 बोर का कट्टा और एक जिंदा राउंड बरामद हुआ। पुलिस अब हथियार के स्रोत और आरोपी के आपराधिक संपर्कों की भी जांच कर रही है।

सिरोल में क्राइम ब्रांच और पुलिस की संयुक्त कार्रवाई

सिरोल क्षेत्र में थाना हजीरा और क्राइम ब्रांच की संयुक्त टीम ने कार्रवाई करते हुए करन बाथम को गिरफ्तार किया। पुलिस के अनुसार आरोपी के कब्जे से 315 बोर का कट्टा और दो जिंदा राउंड बरामद किए गए। संयुक्त टीम की कार्रवाई में स्थानीय पुलिस के साथ क्राइम ब्रांच की भूमिका भी सामने आई।

हजीरा में एक साथ दो बदमाश गिरफ्तार, पिस्टल भी बरामद

हजीरा थाना पुलिस ने जेसी मिल शिव मंदिर के पास कार्रवाई करते हुए दो आरोपियों को अवैध हथियारों के साथ गिरफ्तार किया। पुलिस के अनुसार सचिन पवैया के कब्जे से 32 बोर की पिस्टल और पांच जिंदा राउंड बरामद हुए, जबकि राहुल खटीक उर्फ टेंकर के कब्जे से 315 बोर का कट्टा और एक चला हुआ राउंड बरामद किया गया। दोनों के खिलाफ आर्म्स एक्ट के तहत प्रकरण दर्ज किए गए हैं।

बरामदगी ने खड़े किए कई सवाल

ऑपरेशन ईगल के दौरान बरामद हथियारों की संख्या ने जिले में अवैध हथियारों के नेटवर्क को लेकर कई सवाल खड़े कर दिए हैं। एक ही अभियान में अलग-अलग थाना क्षेत्रों से 315 बोर के 11 कट्टे और 32 बोर की पिस्टल का मिलना इस बात की ओर इशारा करता है कि पुलिस को अवैध हथियार रखने वालों के खिलाफ लगातार निगरानी की आवश्यकता है। अब पुलिस के सामने केवल आरोपियों के खिलाफ कार्रवाई ही नहीं, बल्कि इन हथियारों की सप्लाई कहां से हुई, इन्हें किसने उपलब्ध कराया और आरोपी किन लोगों के संपर्क में थे, इसकी पड़ताल भी अहम होगी।

हथियारों का सोशल मीडिया कनेक्शन भी पुलिस के रडार पर

ऑपरेशन ईगल का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य उन बदमाशों पर कार्रवाई करना भी है जो अवैध हथियारों का सोशल मीडिया पर प्रदर्शन करते हैं। ऐसे मामलों में पुलिस के सामने चुनौती केवल हथियार बरामद करने की नहीं, बल्कि हथियारों के प्रदर्शन के पीछे मौजूद नेटवर्क और युवाओं पर पड़ने वाले प्रभाव को रोकने की भी है। पुलिस की निगरानी यदि सोशल मीडिया गतिविधियों और जमीनी स्तर के मुखबिर तंत्र के साथ आगे भी जारी रहती है तो अवैध हथियार रखने वाले कई संदिग्धों तक पहुंच बनाई जा सकती है।

वरिष्ठ अधिकारियों की निगरानी में कई थाना क्षेत्रों में एक साथ कार्रवाई

ऑपरेशन ईगल की कार्रवाई वरिष्ठ अधिकारियों के निर्देशन में की गई। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक सुजावल जग्गा, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक पूर्व डॉ. शिवेश सिंह बघेल और अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक ग्रामीण जयराज कुबेर ने अपने-अपने क्षेत्रों में थाना प्रभारियों को अवैध हथियार रखने वाले बदमाशों की धरपकड़ के निर्देश दिए। वहीं सीएसपी महाराजपुरा नागेन्द्र सिंह सिकरवार, एसडीओपी बेहट मनीष यादव, सीएसपी विश्वविद्यालय रवि भदौरिया, सीएसपी मुरार संदीप बांगरे, एसडीओपी डबरा सौरभ कुमार और एसडीओपी घाटीगांव शैलेन्द्र शर्मा के मार्गदर्शन में पुलिस टीमों ने कार्रवाई की।

12 गिरफ्तारियां, 12 हथियार और राउंड की बड़ी बरामदगी

पूरे अभियान की बात करें तो ग्वालियर पुलिस ने 12 आरोपियों को गिरफ्तार किया है। बरामदगी में 315 बोर के 11 देशी कट्टे, एक 32 बोर पिस्टल, 13 जिंदा राउंड, पांच जिंदा राउंड और एक खाली खोखा शामिल है। एक आरोपी के पास से चला हुआ राउंड भी बरामद होने की बात पुलिस ने बताई है। पुलिस की ओर से सभी मामलों में संबंधित धाराओं के तहत प्रकरण दर्ज कर आगे की जांच की जा रही है।

अब हथियारों के स्रोत तक पहुंचना बड़ी चुनौती

ऑपरेशन ईगल के तहत गिरफ्तारी और हथियार बरामदगी पुलिस की कार्रवाई का पहला चरण है। असली चुनौती अब यह पता लगाना होगी कि ये हथियार आरोपियों तक कैसे पहुंचे। पुलिस यदि गिरफ्तार आरोपियों से पूछताछ के आधार पर हथियार सप्लाई करने वालों, मध्यस्थों और संभावित नेटवर्क तक पहुंचती है तो अभियान का असर और व्यापक हो सकता है। आने वाले दिनों में पुलिस की जांच का फोकस इसी दिशा में रहने की संभावना है।

इनका कहना

'ग्वालियर जिले में अवैध हथियार रखने, उनका प्रदर्शन करने और उनके जरिए दहशत फैलाने वालों के खिलाफ पुलिस की कार्रवाई लगातार जारी रहेगी। ऑपरेशन ईगल के तहत ऐसे बदमाशों की पहचान कर सख्त वैधानिक कार्रवाई की जा रही है। अपराधियों को किसी भी कीमत पर बख्शा नहीं जाएगा और हथियारों के स्रोत तक पहुंचकर पूरे नेटवर्क पर कार्रवाई की जाएगी।'

धर्मवीर सिंह, एसएसपी

चित्रकूट में बाढ़ से हालात होटलों में फंसे लोग

6 राज्यों में भारी बारिश का अलर्ट, बिहार में गंगा-गंडक उफान पर, 15 जिले हाई अलर्ट, , हेलिकॉप्टर से रेस्क्यू

नई दिल्ली,(ए)। देश के कई हिस्सों में मानसून का असर अलग-अलग रूप में देखने को मिल रहा है। मध्य प्रदेश के चित्रकूट समेत कई जिलों में भारी बारिश के बाद बाढ़ जैसे हालात बने हुए हैं, जबकि बिहार में गंगा और गंडक नदियों का जलस्तर लगातार बढ़ रहा है। दूसरी ओर राजस्थान के 17 जिलों में मानसून कमजोर रहने से सूखे जैसे हालात पैदा हो गए हैं। मौसम विभाग ने अरुणाचल प्रदेश, असम, मेघालय, छत्तीसगढ़ और पश्चिम बंगाल के गंगा तटीय इलाकों में भारी से बहुत भारी बारिश की संभावना जताई है।

मंदाकिनी खतरे के निशान से 26 फीट ऊपर

मध्य प्रदेश के सतना, चित्रकूट, टीकमगढ़, छतरपुर और पन्ना में भारी बारिश के कारण बाढ़ जैसे हालात हैं। चित्रकूट में मंदाकिनी नदी का जलस्तर खतरे के निशान से करीब 26 फीट ऊपर पहुंच गया। घाटों के आसपास करीब 400 दुकानें पानी में डूब गईं। कई लोग घरों और होटलों में फंस गए हैं। स्थिति को देखते हुए प्रशासन ने राहत और बचाव अभियान तेज कर दिया है।

नोएडा में बोरी में भरकर लाश फेंकी, 24 घंटे में पुलिस ने मार गिराया

6 साल की बच्ची से रेप-हत्या करने वाला एनकाउंटर में ढेर

नोएडा, एजेंसी

ग्रेटर नोएडा में 6 साल की बच्ची से रेप के बाद हत्या के आरोपी को पुलिस ने एनकाउंटर में मार गिराया। शनिवार शाम 5 बजे पुलिस आरोपी को बच्ची का शव बरामद कराने के लिए ले गई थी। शव लेकर लौटते समय आरोपी ने पुलिस हिरासत से भागने की कोशिश की थी। इसी दौरान पुलिस ने गोली चलाई, तो वह घायल हो गया। अस्पताल में इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई।

दरअसल, 28 अगस्त (शुक्रवार) को बच्ची घर से अचानक लापता हो गई थी। घरवालों की शिकायत पर पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर तलाश शुरू की। 5 टीमें बनाईं और आसपास लगे सीसीटीवी फुटेज से जांच शुरू की। इस दौरान बच्ची के घरवालों ने बलराज को पकड़कर पुलिस के हवाले कर दिया। वह बच्ची के चाचा के यहां किराए पर रहता था। सीसीटीवी में वह बोरी में बच्ची को ले जाता दिख रहा था। शनिवार दोपहर पुलिस ने बलराज को गिरफ्तार कर लिया था।

संपादकीय

मुख्य न्यायाधीश कानून पढ़ने वाले छात्रों के निशाने पर ?

भारत में न्यायपालिका को लोकतंत्र का सबसे महत्वपूर्ण स्तंभ माना जाता है। सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश से देश की जनता केवल कानूनी फैसलों की अपेक्षा नहीं करती, बल्कि निष्पक्षता, संवेदनशीलता और संविधान के मूल्यों की रक्षा की उम्मीद भी करती है। ऐसे में जब देश के प्रमुख राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालयों के विद्यार्थी ही मुख्य न्यायाधीश की भूमिका और सार्वजनिक आचरण पर सवाल उठाने लगें, तब इसे केवल एक व्यक्ति के विरोध के रूप में देखना पर्याप्त नहीं होगा। यह विरोध न्यायपालिका और नई पीढ़ी के बीच पैदा हो रहे विश्वास के संकट का सबसे बड़ा संकेत है। इसी तरह से आम जनता के लिए अलग, सरकार और बड़े-बड़े लोगों के लिए न्यायपालिका की अलग भूमिका को लेकर पिछले कुछ वर्षों में यह विरोध बढ़ता हुआ दिख रहा है। आम लोगों के दिमाग में यह बात घर कर रही है, कि इस देश में दो तरह के कानून लागू हैं। एक अमीरों के लिए और दूसरा गरीबों के लिए। हाल के घटनाक्रम ने इस चिंता को और गहरा कर दिया है। हैदराबाद स्थित नल्सर यूनिवर्सिटी के सैकड़ों विद्यार्थियों ने मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत को दीक्षांत समारोह में मुख्य अतिथि बनाए जाने पर आपत्ति जताई। विद्यार्थियों ने जंतर-मंतर पर प्रदर्शनकारियों के खिलाफ कथित पुलिस कार्रवाई से संबंधित मामले की सुनवाई में वीडियो देखने से इनकार किए जाने को लेकर सवाल उठाए। इसके बाद बेंगलुरु की प्रतिष्ठित नेशनल लॉ स्कूल ऑफ इंडिया यूनिवर्सिटी (एनएलएसआईयू) में भी विद्यार्थियों और पूर्व विद्यार्थियों ने मुख्य न्यायाधीश तथा बार काउंसिल ऑफ इंडिया के अध्यक्ष मनन कुमार मिश्रा की प्रस्तावित उपस्थिति पर आपत्ति दर्ज कराई। उपलब्ध जानकारी के अनुसार 165 स्नातक विद्यार्थियों, 409 वर्तमान विद्यार्थियों और 128 पूर्व विद्यार्थियों ने इस संबंध में खुला पत्र जारी कर अपना विरोध दर्ज कराया। अंततः 2026 का दीक्षांत समारोह रद्द कर दिया गया। यूनिवर्सिटी ने विद्यार्थियों को डिग्रियां डाक से भेजना और स्वयं छात्रों को प्रदान करना शुरू कर दिया। यह घटना इसलिए असाधारण है, क्योंकि कानून के विद्यार्थी न्यायपालिका से बाहर के नहीं हैं।

नेपाल की त्रासदी से भारत को सबक लेने की जरूरत

इस त्रासदी का सबसे बड़ा संदेश जलवायु परिवर्तन से जुड़ा है। हिमालय केवल बर्फ से ढकी पर्वतमाला नहीं, बल्कि एशिया की जल-सुरक्षा का आधार है। तापमान बढ़ने के साथ ग्लेशियर तेजी से पीछे हट रहे हैं और अनेक नई ग्लेशियर झीलें बन रही हैं। इंटरनेशनल सेंटर फॉर इंटीग्रेटेड माउंटेन डेवलपमेंट के अनुसार हिंदूकुश हिमालय क्षेत्र में लगभग 25,000 ग्लेशियर झीलें हैं और बढ़ता तापमान ग्लेशियर झीलों के फटने यानी (जीएलओएफ) के जोखिम को बढ़ा रहा है। नेपाल में 1920 के दशक से अब तक 90 से अधिक ग्लेशियर झील विस्फोट बाढ़ दर्ज की जा चुकी हैं। इसलिए यह मान लेना उचित नहीं होगा कि नेपाल की घटना का एकमात्र कारण ग्लोबल वार्मिंग ही है। भूकंपीय गतिविधियां, भूगर्भीय अस्थिरता, अत्यधिक वर्षा, हिमस्खलन और प्राकृतिक ढलानों की कमजोरी भी महत्वपूर्ण कारक हैं। लेकिन जलवायु परिवर्तन इन जोखिमों को बढ़ाने वाली पृष्ठभूमि अवश्य तैयार कर रहा है। गर्म होता हिमालय ग्लेशियरों और पर्वतीय भूभाग को अस्थिर कर रहा है, जिससे ऐसी घटनाओं की संभावित तीव्रता और व्यापकता बढ़ सकती है। वैज्ञानिकों ने भी इस बात पर सावधानी बरती है कि किसी एक घटना को सीधे जलवायु परिवर्तन का परिणाम घोषित करने के बजाय दीर्घकालिक जलवायु और भूगर्भीय बदलावों को साथ देखकर समझना चाहिए।

..................ललित गर्ग..................

नेपाल में 26 अगस्त 2026 को आई विनाशकारी बाढ़ और हिमस्खलन ने एक बार फिर यह कठोर सत्य सामने ला दिया है कि प्रकृति के साथ खिलवाड़ और पहाड़ों की संवेदनशीलता की अनदेखी मानव सभ्यता के लिए कितनी भारी पड़ सकती है। भोटेकोशी नदी तंत्र में ग्लेशियर के बड़े हिस्से के टूटने, बर्फ-पत्थरों के विशाल मलबे के नीचे आने और नदी के प्रवाह में अस्थायी अवरोध बनने के बाद अचानक बाढ़ का जो रौद्र एवं भयावह रूप सामने आया, उसने नेपाल और चीन के तिब्बती क्षेत्र में भारी तबाही मचाई। 29 अगस्त तक उपलब्ध रिपोर्टों के अनुसार नेपाल में 579 और तिब्बत में 5 लोगों की मौत की पुष्टि हो चुकी है तथा लगभग 2,482 लोग लापता बताए जा रहे हैं। हजारों लोगों को बचाया गया है, लेकिन दुर्गम भौगोलिक परिस्थितियों और लगातार बने नए खतरे के कारण राहत एवं बचाव कार्य अभी भी चुनौतीपूर्ण हैं। यह घटना केवल नेपाल की प्राकृतिक त्रासदी नहीं है, बल्कि पूरे हिमालयी क्षेत्र के लिए भविष्य का भयावह संकेत है। प्रारंभिक वैज्ञानिक आकलन बताते हैं कि ग्लेशियर का हिस्सा टूटकर नीचे गिरा, जिससे बर्फ, चट्टान, मिट्टी और मलबे का विशाल प्रवाह पैदा हुआ। इसने नदी के प्रवाह को अवरुद्ध किया और बाद में जमा पानी तथा मलबे के दबाव से अचानक विनाशकारी बाढ़ आई। विशेषज्ञों के अनुसार ऐसे घटनाक्रम को केवल सामान्य बाढ़ कहना भूल होगी, यह ग्लेशियर, भूस्खलन, मलबा-प्रवाह और नदी-बाढ़ जैसे अनेक खतरों के एक साथ सक्रिय होने वाली 'बहु-आपदा' का उदाहरण है।

इस त्रासदी का सबसे बड़ा संदेश जलवायु परिवर्तन से जुड़ा है। हिमालय केवल बर्फ से ढकी पर्वतमाला नहीं, बल्कि एशिया की जल-सुरक्षा का आधार है। तापमान बढ़ने के साथ ग्लेशियर तेजी से पीछे हट रहे हैं और अनेक नई ग्लेशियर झीलें बन रही हैं। इंटरनेशनल सेंटर फॉर इंटीग्रेटेड माउंटेन डेवलपमेंट के अनुसार हिंदूकुश हिमालय क्षेत्र में लगभग 25,000 ग्लेशियर झीलें हैं और बढ़ता तापमान ग्लेशियर झीलों के फटने यानी (जीएलओएफ) के जोखिम को बढ़ा रहा है। नेपाल में 1920 के दशक से अब तक 90 से अधिक ग्लेशियर झील विस्फोट बाढ़ दर्ज की जा चुकी हैं। इसलिए यह मान लेना उचित नहीं होगा कि नेपाल की घटना का एकमात्र कारण ग्लोबल वार्मिंग ही है। भूकंपीय गतिविधियां, भूगर्भीय अस्थिरता, अत्यधिक वर्षा, हिमस्खलन और प्राकृतिक ढलानों की कमजोरी भी महत्वपूर्ण कारक हैं। लेकिन जलवायु परिवर्तन इन जोखिमों को बढ़ाने वाली पृष्ठभूमि अवश्य तैयार कर रहा है। गर्म होता हिमालय ग्लेशियरों और पर्वतीय भूभाग को अस्थिर कर रहा है, जिससे ऐसी घटनाओं की संभावित तीव्रता और व्यापकता बढ़ सकती है। वैज्ञानिकों ने भी इस बात पर सावधानी बरती है कि किसी एक घटना को सीधे जलवायु परिवर्तन का परिणाम घोषित करने के बजाय दीर्घकालिक जलवायु और भूगर्भीय बदलावों को साथ देखकर समझना चाहिए।

नेपाल की घटना भारत के लिए भी गहरी चेतावनी है। इस चेतावनी से सीख लेने की जरूरत है। उत्तराखंड की केदारनाथ त्रासदी, 2021 की ऋषिगंगा आपदा और हिमालयी राज्यों में बार-बार आने वाली बाढ़, भूस्खलन एवं बादल फटने की घटनाएं पहले ही बता चुकी हैं कि पहाड़ों की सहनशीलता असीमित नहीं है। हिमालय में सड़कें, सुरंगें, जलविद्युत परियोजनाएं, होटल, बस्तियां और अन्य निर्माण आवश्यकताओं को पूरा करने के नाम पर तेजी से बढ़ रहे हैं, लेकिन सवाल यह है कि क्या इनके लिए पर्वतीय पर्यावरण की वहन क्षमता का पर्याप्त आकलन हो रहा है? विकास जरूरी है, मगर ऐसा विकास जो पहाड़ों को खोखला करके ही संभव हो, अंततः मानव जीवन और स्वयं विकास दोनों के लिए संकट बन सकता है।

मोबाइल कीमती और सस्ती हो गयी जान

- मनोज कुमार अग्रवाल

हाल के दिनों में मोबाइल फोन के अत्यधिक इस्तेमाल, विवाद या लत के कारण जान गंवाने की कई दर्दनाक घटनाएं सामने आई हैं।महाराष्ट्र की घटना ने समूचे देश के अभिभावकों को दहला दिया है हाल ही में महाराष्ट्र के छत्रपति संभाजीनगर (तीसगांव) में मोबाइल को लेकर हुए विवाद के बाद एक 19 वर्षीय युवक ने पहाड़ से कूदने की धमकी दी। उसे बचाने की कोशिश में पहले उसके पिता और फिर सदमे में आकर मां की भी गहरी खाई में गिरने से मौत हो गई।एक पूरा परिवार एक मोबाइल के चक्कर में दुनिया से चला गया। कई बार तो मोबाइल की खातिर किशोर वय बच्चे बेहद संगीन अपराध को अंजाम दे रहे हैं। केरल में एक अन्य मामले में मोबाइल के इस्तेमाल पर रोक लगाने और डांटने से नाराज 13 वर्षीय बच्ची ने अपने साथियों के साथ मिलकर अपने ही नाना की हत्या करवा दी।

कई जगहों पर बच्चों या युवाओं द्वारा मोबाइल छीनने, फोन पर कहासुनी होने या नया फोन न मिलने पर आत्महत्या करने के दुखद समाचार मिलते रहते हैं।कुछ वारदातों पर नजर डालिए

हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिले के धर्मशाला में हाल ही में एक 14 साल के लड़के जान दे दी. परिवार ने जब उसे फ्री फाइर ऑनलाइन गेम खेलने से रोका तो नाराज होकर किशोर ने आत्मघाती कदम उठा लिया. फिलहाल, पुलिस ने शव को कब्जे में लिया है. परिवार ने किसी पर कोई शक नहीं जताया है.पिता रवि कुमार ने बताया कि प्रिंस लगातार अपनी मां से मोबाइल फोन मांग रहा था, ताकि वह गेम खेल सके. मां ने उसे मोबाइल नहीं दिया और इसके बाद प्रिंस नाराज होकर अपने कमरे में चला गया परिवार ने यह कल्पना भी नहीं की थी कि नाराजगी में वह इतना बड़ा कदम उठा लेगा.प्रिंस के पिता रवि

कुमार ने घटना के बाद अन्य अभिभावकों से भावुक अपील करते हुए कहा कि उनका बेटा तो चला गया, लेकिन किसी और का बच्चा ऐसी घटना का शिकार न हो उन्होंने माता-पिता से बच्चों को मोबाइल फोन और गेमिंग की लत से दूर रखने का आग्रह किया.

बिलासपुर छत्तीसगढ़ में भी एक दुखद घटना सामने आई है, जहां खराब मोबाइल तुरंत ठीक नहीं होने से नाराज 9वीं की छात्रा ने घर में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। घटना के समय पिता काम पर गए हुए थे। पुलिस ने मर्ग कायम कर मामले की जांच शुरू कर दी है।

सिविल लाइन थाना क्षेत्र में एक 9वीं कक्षा की छात्रा द्वारा आत्महत्या किए जाने का मामला सामने आया है। प्रारंभिक जानकारी के अनुसार छात्रा अपने खराब मोबाइल को लेकर परेशान थी। पिता ने पैसे मिलने के बाद मोबाइल ठीक कराने की बात कही थी, जिसके कुछ देर बाद छात्रा ने यह आत्मघाती कदम उठा लिया।

छत्तीसगढ़ में कबीरधाम जिले में दो अगस्त को एक हृदयविदारक घटना सामने आई है. आठवीं कक्षा में पढ़ने वाली 14 साल की छात्रा ने मोबाइल चलाने को लेकर परिवार की डांट फटकार के बाद अपनी जान दे दी. घटना के बाद परिवार में मातम पसर गया।

3 अगस्त को यूपी के श्रावस्ती जिले में एक 16 वर्षीय छात्रा ने मोबाइल देखने को लेकर माँ की डांट से क्षुब्ध होकर फांसी लगा कर जान दे दी। बाराबंकी जिले के करौंदा गांव में मोबाइल फोन का प्रयोग करने से मना किए जाने पर निशा (16) ने गांव के सामुदायिक शौचालय में फंदे से लटक कर जान दे दी।

वाराणसी में सिगरा थाना अंतर्गत लल्लापुरा क्षेत्र में एक मां ने अपनी बेटी को फोन पर ज्यादा बात करने से मना किया था, इसके बाद गुस्से में आकर बेटी ने फंदे से लटक कर अपनी जान दे दी।

उरई के कोंच कस्बे के पटेल नगर में एक माह पहले संदिग्ध परिस्थितियों में 17 वर्षीय छात्रा ज्योति का शव घर के आंगन में साड़ी के फंदे से लटका मिला। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को नीचे उतारकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। घटना की वजह के बारे में बताया जा रहा है कि छात्रा बचपन से ही मामा के घर रह रही थी और मोबाइल पर बात करने को लेकर मामा ने उसे फटकारा था।

केरल के चलक्का में 13 वर्षीय एक लड़की अपने घर में फंदे से लटकी मिली। उसके माता-पिता ने उसे मोबाइल फोन इस्तेमाल करने से कथित तौर पर रोका था, जिसके बाद यह घटना हुई। पुलिस ने शुक्रवार को यह जानकारी दी।

पुलिस के अनुसार मृतका की पहचान विजेश की बेटी पार्वती के रूप में हुई है।

ये तो सिर्फ कुछ बानगी है देश भर में हर दिन बच्चे मोबाइल की लत के चलते जान गंवा रहे हैं बच्चों में मोबाइल फोन की लत और उसके कारण होने वाले गंभीर परिणाम आज एक बेहद चिंताजनक सामाजिक समस्या बन चुके हैं।मोबाइल की लत के खतरे हिंसक व्यवहार और तनाव: अत्यधिक स्क्रीन टाइम और ऑनलाइन गेम बच्चों में गुस्सा, आक्रामकता और मानसिक तनाव बढ़ा रहे हैं। कई बार मनपसंद फोन न मिलने या गेम के खतरनाक जाल में फंसकर बच्चे अपनी जान तक जोखिम में डाल लेते हैं और आत्मघाती कदम उठा रहे हैं। मोबाइल बच्चों के शारीरिक तथा मानसिक विकास में बाधक है इससे बच्चों की आंखें कमजोर होती हैं, नींद की कमी होती है और लिखने पढ़ने व भाषाई विकास धीमा पड़ जाता है। अपने बच्चों के भविष्य को बचाने के लिए जरूरी है कि माता पिता खुद जरूरत के अनुसार मोबाइल का उपयोग करें। बच्चे वही सीखते हैं जो वे अपने माता-पिता को करते देखते हैं।जब माता-पिता खुद रील स्क्रॉल करते रहेंगे या ओटीटी प्लेटफॉर्म पर व्यस्त रहेंगे तो बच्चों को कैसे अनुशासित करेंगे? छोटे बच्चों को फोन देने से बचें और बड़े बच्चों के लिए समय सीमा तय करें।इतना ही नहीं बच्चों को बाहर पार्क में खेलने के लिए प्रेरित करें और उन्हें किताबें या खिलौने दें।उनकी रूचि मोबाइल से इतर किसी कला गारडनिंग पढ़ाई खेल आदि के लिए प्रेरित करें। की देशों ने मोबाइल के बच्चों के विकास पर घातक परिणामों को देखते हुए बच्चों के मोबाइल यूज पर पाबंदी लगा दी है कुछ ने समय सीमा तय की है।

राशिफल

शुभ संवत 2083, शाके 1948, सौम्य गोष्ठ, श्रावण शुक्ल पक्ष, वर्षा ऋतु, गुरु उदय, पूर्वे शुक्रोदय, पश्चिमी तिथि, एकादशी, सोमवार, मूल नक्षत्रे, विव योगे, वलकरणे, धनु की चंद्रमा, पुत्रदा एकादशी व्रत वैष्णव, मूल समाप्त 6/4 सांयन कन्यायाम तथापि पूर्व दिशा की यात्रा शुभ उत्तम फलदायी होगी7

आज जन्म लिए बालक का फल........

आज जन्म लिया बालक योग्य, बुद्धिमान, चपल, चतुर किन्तु जिद्दी-हठी, स्वतंत्र विचार का मुहफट, उद्देश्यपूर्ण करने वाला, बड़ा कुशल, उद्यमी, वक्ता-अधिवक्ता, राजनीतिज्ञ तथा सैनिक, सिपाही, कमांडर होगा।

मेष :- आशानुकूल सफलता का हर्ष होगा, दैनिक कार्यगति में सुधार होगा, कार्ययोजना अवश्य बनेगी।

वृष :- समय की अनुकूलता से लाभांवित होंगे, विवादग्रस्त होने से अवश्य बचें।

मिथुन :- मनोबल उत्साह वर्धक होगा, इष्ट मित्र सुखवर्धक रहें, विशेष कार्य अवश्य ही बनेंगे।

कर्क :- स्वास्थ्य हानि से बेचैनी, मानसिक उद्विग्नता, शरीर क्षमता कमजोर पड़ेगी, ध्यान रखें।

सिंह :- आशानुकूल सफलता का हर्ष, कार्यवृत्ति में सुधार के योग बनेंगे, समय का ध्यान अवश्य रखें।

कन्या :- समय पर सोचे हुए कार्य बनेंगे किन्तु कुछ बाधा व विलम्ब अवश्य होगा।

तुला :- मानसिक क्लेश व अशांति, मनोवृत्ति मलिन रहे तथा विरोधी तत्व परेशान अवश्य करें।

वृश्चिक :- आर्थिक योजना पूर्ण हों, सफलता के साधन जुटायें, कार्य संतोष की चिन्ता होगी।

धनु :- कार्य योजना फलीभूत होगी, आशानुकूल सफलता से हर्ष होगा, रुके कार्य बनेंगे।

मकर :- इष्ट मित्रों से सुख-ऐश्वर्य की प्राप्ति, स्त्री वर्ग से हर्ष, तनाव तथा क्लेश, अशांति बनेगी।

कुम्भ :- मान-प्रतिष्ठा, प्रभुत्व वृद्धि, कार्य कुशलता से संतोष एवं रुके कार्य बनेंगे।

मीन :- दैनिक कार्यगति में सुधार, प्रत्येक कार्य में बाधा उद्विग्नता अवश्य बनेगी।

कंगना रनौत का तापसी पन्नू पर फिर तीखा वार, मैं प्रतिष्ठित राजपूत जमींदार परिवार से हूं

बॉलीवुड की क्वीन और अब सांसद कंगना रनौत तथा अभिनेत्री तापसी पन्नू के बीच का पुराना विवाद थमने का नाम नहीं ले रहा है। कंगना ने पहले तापसी को अपनी सस्ती कॉपी कहा था, और एक बार फिर उन्होंने तापसी पर निशाना साधते हुए सोशल मीडिया पर तीखी टिप्पणी की है। कंगना ने बिना नाम लिए तापसी के एक हालिया बयान पर पलटवार किया है, जिसने इस मामले को फिर से गरमा दिया है। दरअसल, तापसी पन्नू ने हाल ही में एक इंटरव्यू में कंगना के साथ अपने पुराने विवाद पर प्रतिक्रिया दी थी, जिसके बाद कंगना ने अपनी भड़ास निकाली है। तापसी पन्नू ने उस बातचीत के दौरान कंगना के साथ अपने विवाद पर बात करते हुए कहा था कि उन्होंने कंगना से कभी व्यक्तिगत स्तर पर मुलाकात नहीं की थी।

तापसी पन्नू ने बताया कि जब उनके और कंगना के बीच विवाद शुरू हुआ था, या जब कंगना ने उन्हें सस्ती कॉपी कहा था, तब भी वे कभी मिली नहीं थीं। तापसी से जब इस पूरे मामले में सवाल पूछा गया तो उन्होंने अपनी राय व्यक्त करते हुए कहा कि दोनों की सोच और एक-दूसरे के बारे में बात करने का तरीका उनकी अपनी परवरिश और चीजों को देखने के नजरिए को दर्शाता है। उनके मुताबिक, लोग उन दोनों के सार्वजनिक बयानों को देखकर आसानी से समझ सकते हैं कि कौन किस तरह के पृष्ठभूमि से आता है। इस बयान के जरिए तापसी ने अपनी और कंगना की अलग-अलग पृष्ठभूमि की ओर इशारा किया था।

तापसी के इस बयान पर कंगना रनौत ने अपनी इंस्टाग्राम स्टोरी के जरिए तुरंत रिएक्शन दिया। कंगना ने अपने पोस्ट में दावा किया कि आर्थिक रूप से कठिन परिस्थितियों में पले-बढ़े कई लोग उनकी परवरिश पर लगातार सवाल उठाते रहे हैं और उनके माता-पिता को भी निशाना बनाते हैं। उन्होंने अपनी पोस्ट में लिखा, यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है, लेकिन वह अकेली इंसान नहीं है जिसने मेरी परवरिश पर सवाल खड़े किए हैं। गरीबी और कठिन परिस्थितियों में पले-बढ़े कई लोग मेरी परवरिश पर सवाल उठाते रहे हैं। कंगना ने आगे अपनी पृष्ठभूमि के बारे में स्पष्ट करते हुए लिखा, मैं एक प्रतिष्ठित राजपूत जमींदार परिवार से ताल्लुक रखती हूं। अपने दम पर अपना करियर बनाना मेरा निजी फैसला था, इसके लिए मेरे परिवार को बीच में लाने की क्या जरूरत है। आप ये सब कहां सीखते हो? जीसस के इंग्लिश स्कूल में। कंगना की यह टिप्पणी तापसी के बैकग्राउंड वाले बयान पर सीधा हमला थी, जिसमें उन्होंने तापसी के बयान को उनकी परवरिश पर सवाल उठाने जैसा बताया और साथ ही एक ताना भी कसा। यह विवाद एक बार फिर सोशल मीडिया पर चर्चा का विषय बन गया है, और दोनों अभिनेत्रियों के फैंस इस पर अपनी-अपनी राय रख रहे हैं।

मधुबाला की बायोपिक में सारा अर्जुन, संजय लीला भंसाली बनाएंगे फिल्म

बॉलीवुड के मशहूर निर्देशक संजय लीला भंसाली अपनी आगामी फिल्म लव एंड वॉर की शूटिंग पूरी करने के करीब हैं और इसके तुरंत बाद वह अपने अगले बड़े प्रोजेक्ट पर काम शुरू करने वाले हैं। इस बीच सिनेमा प्रेमियों के लिए एक बेहद रोमांचक खबर सामने आई है कि संजय लीला भंसाली हिंदी सिनेमा की बेमिसाल अदाकारा मधुबाला की बायोपिक का निर्माण करने की तैयारी में हैं। इस बहुप्रतीक्षित बायोपिक में धुरंधर फेम अभिनेत्री सारा अर्जुन, मधुबाला के प्रतिष्ठित किरदार में नजर आ सकती हैं। यह सारा अर्जुन के करियर के लिए एक बहुत बड़ा मील का पत्थर साबित हो सकता है, क्योंकि मधुबाला का किरदार निभाना किसी भी अभिनेत्री के लिए एक चुनौतीपूर्ण और सम्मानजनक अवसर होगा।

हालांकि अभी इस फिल्म का शीर्षक तय नहीं हुआ है, लेकिन डार्लिंग्स जैसी सफल फिल्म का निर्देशन कर चुकीं जसमीत के. रीन इस बायोपिक की कमान संभालेंगी। रिपोर्ट्स के मुताबिक, फिल्म की शूटिंग इसी साल सितंबर से शुरू होने की उम्मीद है, और सारा अर्जुन ने मधुबाला के किरदार में पूरी तरह ढलने के लिए अपनी तैयारियां भी शुरू कर दी हैं। सूत्रों के अनुसार, मुंबई के गोरेगांव स्थित रॉयल पाम्स में जैसे ही संजय लीला भंसाली की लव एंड वॉर की शूटिंग खत्म होगी, वहीं पर इस बायोपिक का भव्य सेट तैयार किया जाएगा। प्रोडक्शन डिजाइन टीम अगस्त के आखिर तक इस लोकेशन को 1950 के दशक के परिवेश में ढालने का काम शुरू कर देगी, ताकि सितंबर में शूटिंग फ्लोर पर जा सके। मेकर्स का पूरा ध्यान मधुबाला की अद्वितीय शख्सियत, उनके हाव-भाव और उस दौर के तौर-तरीकों को पर्दे पर जीवंत रूप से उतारने पर है, जिससे दर्शक उनके जीवन की गहराई और खूबसूरती को महसूस कर सकें।

भारतीय सिनेमा में मधुबाला का नाम आज भी एक मिसाल है। महज 36 साल की उम्र में दुनिया को अलविदा कहने वाली इस महान अभिनेत्री ने महल, मिस्टर एंड मिसेज 55, चलती का नाम गाड़ी और बरसात की रात जैसी कई सदाबहार फिल्मों में अपनी अद्भुत अदाकारी का जादू बिखेरा। वहीं, के. आसिफ की कालजयी फिल्म मुगल-ए-आजम में उन्होंने अपनी दमदार अदाकारी से अनारकली के किरदार को अमर कर दिया, जिसे आज भी याद किया जाता है। इस बायोपिक की बाकी स्टारकास्ट और स्क्रीनप्ले को लेकर फिलहाल ज्यादा जानकारी सामने नहीं आई है, लेकिन इस प्रोजेक्ट को लेकर अभी से ही फैंस के बीच जबरदस्त उत्सुकता और चर्चा का माहौल बन गया है।

बायोपिक का काम शुरू करने से पहले, संजय लीला भंसाली अपनी महत्वाकांक्षी फिल्म लव एंड वॉर को अंतिम रूप दे रहे हैं। इस फिल्म में बॉलीवुड के तीन बड़े सितारे रणबीर कपूर, आलिया भट्ट और विक्की कौशल मुख्य किरदारों में नजर आएंगे। फिलहाल मुंबई के रॉयल पाम्स में फिल्म के आखिरी गाने की शूटिंग चल रही है, जो अगस्त के अंत तक खत्म होने की उम्मीद है। संजय लीला भंसाली द्वारा निर्देशित यह भव्य फिल्म 21 जनवरी 2027 को सिनेमाघरों में

समीक्षा भटनागरः स्क्रीन पर किरदार को न्याय देना ही अभिनेता की जिम्मेदारी

टेलीविजन की जानी-मानी अभिनेत्री समीक्षा भटनागर इन दिनों स्टार प्लस के बेहद लोकप्रिय टीवी सीरियल अनुपमा में श्रुति आहूजा के किरदार में नजर आ रही हैं। अभिनेत्री का मानना है कि वे बेहद खुशकिस्मत हैं कि उन्हें श्रुति का इतना दिलचस्प किरदार निभाने और डीकेपी (डायरेक्टर्स कट प्रोडक्शन) प्रोडक्शंस जैसे प्रतिष्ठित बैनर में काम करने का मौका मिला है। समीक्षा भटनागर ने अपने अनुभव साझा करते हुए बताया, टीवी सीरियल अनुपमा पहले से ही बहुत लोकप्रिय शो है। जब मुझे डीकेपी प्रोडक्शंस की तरफ से श्रुति आहूजा का किरदार निभाने का प्रस्ताव मिला, तो मैंने सबसे पहले उसे गहराई से समझा। मुझे लगा कि इस किरदार में दम है और यह मुझ पर सूट करता है। इसी बात ने मुझे जल्दी से इस रोल को स्वीकार करने के लिए मना लिया, और अब लोगों को भी यह किरदार पसंद आ रहा है।

अभिनेत्री ने आगे श्रुति आहूजा के किरदार की बारीकियों के बारे में विस्तार से बताया। उनका कहना है कि हर भूमिका एक नया चैलेंज लेकर आती है, और श्रुति आहूजा का किरदार भी कुछ ऐसा ही था। समीक्षा ने कहा, वह एक मां हैं, जिन्हें अपनी बेटी के लिए खुद को हर बार जस्टिफाई करना पड़ता है। वह अपनी बेटी से बहुत प्यार करती हैं, लेकिन वह एक नकारात्मक किरदार बिल्कुल नहीं हैं, और मैं नहीं चाहती थी कि लोग उन्हें उस तरह से देखें। एक अभिनेता के तौर पर, मेरा यह मानना है कि स्क्रीन पर उस कैरेक्टर को पूरी तरह से जस्टिफाई करना एक एक्टर की सबसे बड़ी जिम्मेदारी होती है।

समीक्षा भटनागर ने यह भी बताया कि जब भी उन्हें कोई रोल ऑफर होता है, तो वह सबसे पहले अपने किरदार के बारे में गंभीरता से सोचती हैं कि उसमें क्या नयापन लाया जा सकता है। उन्होंने अपनी अभिनय प्रक्रिया के बारे में बताते हुए कहा, जब भी मुझे कोई रोल ऑफर होता है, तो मेरे लिए यह समझना बहुत जरूरी होता है कि मैं उस किरदार में क्या नयापन ला सकती हूं। एक एक्टर के तौर पर, मैं उसमें क्या योगदान दे सकती हूं? उसके बाद, कैरेक्टर के बारे में मेरी समझ बहुत जरूरी हो जाती है।

रुबीना ने स्टंट रियलिटी शो 'खतरों के खिलाड़ी' से जुड़ी यादें की साझा

अभिनय के साथ-साथ डांस और खतरनाक स्टंट में भी टीवी की लोकप्रिय अभिनेत्री रुबीना दिलैक ने अपनी प्रतिभा साबित की है। हाल ही में रुबीना ने सोशल मीडिया पर अपने पुराने स्टंट रियलिटी शो 'खतरों के खिलाड़ी' से जुड़ी यादें साझा कीं। उन्होंने शो के दौरान की तस्वीरों और वीडियो का एक वीडियो साझा किया, जिसमें मुश्किल स्टंट के साथ-साथ दोस्तों के साथ बिताए खुशनुमा पल और उनका अलग अंदाज भी नजर आया। रुबीना ने इंस्टाग्राम पर साझा किए गए वीडियो में शो के दौरान की कई तस्वीरें और छोटी-छोटी वीडियो क्लिप शामिल कीं। इनमें वह अलग-अलग अंदाज में दिखाई दीं। कुछ तस्वीरों में वह ओरी और जैस्मिन भसीन सहित अपने साथी प्रतियोगियों के साथ मस्ती करती नजर आईं। वहीं, कुछ क्लिप में वह कठिन और चुनौतीपूर्ण स्टंट पूरे करती दिखाई दीं। इन यादों को साझा करते हुए रुबीना ने भावुक कैप्शन भी लिखा। उन्होंने कहा कि हर दिन इस सवाल से शुरू होता

था कि अब आगे क्या होगा, लेकिन उनके दिल हंसी, खुशी के आंसुओं और डर जैसी भावनाओं से भरे रहते थे।

'खतरों के खिलाड़ी' मनोरंजन जगत के सितारों पर आधारित स्टंट रियलिटी शो है, जिसमें प्रतियोगियों को अपने डर का सामना करते हुए कठिन से कठिन चुनौतियां पूरी करनी होती हैं। शो में ऊंचाई, पानी, तेज रफ्तार और जोखिम भरी परिस्थितियों से जुड़े स्टंट शामिल होते हैं। ऐसे स्टंट के दौरान कलाकारों को शारीरिक क्षमता के साथ मानसिक मजबूती और सूझबूझ भी दिखानी पड़ती है। यही वजह है कि शो में केवल ताकत नहीं, बल्कि धैर्य और डर पर नियंत्रण भी सफलता के लिए जरूरी होता है। भारत में इस प्रारूप की शुरुआत 'फियर फैक्टर इंडिया' के नाम से हुई थी। बाद में इसका नाम 'फियर फैक्टरः खतरों के खिलाड़ी' रखा गया और यह दर्शकों के बीच बेहद लोकप्रिय हो गया। इसका पहला सीजन 21 जुलाई 2008 को प्रसारित हुआ था।

अगले माह छह मुकाबले खेलेगी भारतीय टीम

विराट और रोहित भी खेलते दिखेंगे

मुम्बई (ए)। भारतीय क्रिकेट टीम को अगले माह सितंबर में करीब छह मुकाबले खेलने हैं, जिससे प्रशंसकों को रोमांचक मुकाबले देखने को मिलेंगे। विराट कोहली और रोहित शर्मा जैसे दिग्गज भी इस दौरान खेलते हुए दिखेंगे। इसे अलावा उभरते खिलाड़ी वैभव सूर्यवंशी भी उतरेंगी। इस माह भारतीय टीम दो देशों से द्विपक्षीय सीरीज और एक मल्टी-नेशन टूर्नामेंट भी खेलेगी।

शुरुआत अफगानिस्तान के खिलाफ तीन मैचों की टी20 सीरीज के साथ होगी। ये सभी मुकाबले राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली के अरुण जेटली स्टेडियम में खेले जाएंगे और शाम 7:00 बजे से इनका सीधा प्रसारण होगा। सीरीज का पहला मैच 13 सितंबर 2026 को होगा, जिसके बाद 15 और 17 सितंबर को दूसरा और तीसरा टी20 मैच खेला जाएगा। यह सीरीज भारतीय टीम के टी20 विश्वकप की तैयारियों को देखते हुए महत्वपूर्ण होगी, खासकर युवा खिलाड़ियों को अपनी प्रतिभा दिखाने का मौका मिलेगा और वे अपनी जगह पक्की करने के प्रयास करेंगे।

वहीं महीने के अंत में भारतीय टीम वेस्टइंडीज के खिलाफ तीन मैचों की एकदिवसीय के पहले दो मुकाबलों में खेलेगी। सीरीज का पहला एकदिवसीय 27 सितंबर 2026 को तिरुवनंतपुरम

के ग्रीनफील्ड इंटरनेशनल स्टेडियम में दोपहर 2:00 बजे से खेला जाएगा। इसके बाद दूसरा एकदिवसीय मैच 30 सितंबर 2026 को डॉ. भूपेन हजारिका क्रिकेट स्टेडियम में आयोजित होगा। ये एकदिवसीय मुकाबले 2026 के सीमित ओवरों के क्रिकेट कैलेंडर में भारत की स्थिति को मजबूत करने में सहायक होंगे, और खिलाड़ियों के पास अपनी फॉर्म को आंकने का सुनहरा अवसर होगा।

इन द्विपक्षीय सीरीज के बीच, भारतीय टीम 2026 एशियाई खेलों के टी20 क्वार्टर फाइनल मुकाबले में भी हिस्सा लेगी। यह महत्वपूर्ण मैच 28 सितंबर 2026 को जापान के कोरोगी स्पोर्ट्स पार्क में सुबह 10:30 बजे से खेला जाएगा।

कुल मिलाकर, सितंबर 2026 में भारतीय टीम 6 अंतरराष्ट्रीय मैच खेलेगी, जिसमें चार टी20 और दो एकदिवसीय मुकाबले शामिल हैं। यह महीना क्रिकेट प्रेमियों के लिए नॉन-स्टॉप एक्शन और रोमांच लेकर आएगा, जहाँ उन्हें भारतीय टीम को टेस्ट क्रिकेट के बजाय केवल सीमित ओवरों के प्रारूप में ही मैदान पर देखने का मौका मिलेगा।

नीरज चोटिल होने के बाद इस साल के बचे हुए सत्र से बाहर हुए

डायमंड लीग, एशियाई खेलों सहित सभी मुकाबलों से हटे

नई दिल्ली (ए)। भारत के स्टार भाला फेंक खिलाड़ी नीरज चोपड़ा एक बार फिर चोटिल होने के कारण इस साल के बचे हुए सत्र से बाहर हो गये हैं। नीरज के टखने का लिगामेंट फट गय है। जिससे वह इस साल जापान में होने वाले एशियाई खेलों सहित सभी मुकाबलों से बाहर हो गये हैं। अब वह ब्रसेल्स में होने वाले डायमंड लीग फाइनल और बुडापेस्ट में पहली बार आयोजित होने वाली वर्ल्ड एथलेटिक्स अल्टीमेट चैंपियनशिप जैसी महत्वपूर्ण प्रतियोगिताओं से भी बाहर हो गये है। 5 सितंबर को होने वाली डॉयमंड लीग के लिए उन्होंने क्वालीफाई भी कर लिया था पर अब उनके बाहर होने से भारत को करारा झटका लगा है।

नीरज ने सोशल मीडिया में अपने

सत्र से बाहर होने की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि ट्रेनिंग के दौरान उनके टखने में लिगामेंट फट गया है। डॉक्टरों और अपनी टीम के साथ बातचीत के बाद, उन्होंने बचे हुए सत्र से हटने का फैसला किया है। नीरज ने अपनी निराशा व्यक्त करते हुए लिखा कि उन्हें आखिरकार वह लय मिलती महसूस हो रही थी, जिसकी उन्हें तलाश थी, खासकर लॉज़ेन में अपना सीजन का सर्वश्रेष्ठ थ्रो करने के बाद पर बदकिस्मती से उन्हें यह चोट लग गई जिसे खेल से बाहर होने के अलावा कोई और विकल्प नहीं है।

बहन एरिका से प्रभावित रही है मीरा एंड्रीवा

न्यूयॉर्क (ए)। रुस की महिला टेनिस स्टार मीरा एंड्रीवा ने अपनी सफलता का श्रेय बड़ी बहन एरिका एंड्रीवा को दिया है। साथ ही कहा कि एरिका उनकी आदर्श रही हैं। वह हमेशा से ही उसका उत्साह बढ़ाती रही है। मीरा ने कहा कि एरिका के साथ बड़े होने से उन्हें एक टेनिस खिलाड़ी के रूप में निखरने में सहायता मिली है।

मीरा ने बताया, मुझे लगता है कि मुझे ज्यादा लाभ हुआ क्योंकि मैं छोटी हूं। टेनिस के लिहाज से, मुझे उतने टूर्नामेंट नहीं खेलने पड़े जितने उन्होंने खेले, और शायद इससे मेरा कुछ समय बच गया। वह हमेशा स्कूल में मेरी मदद करती थीं और मुझे बहुत सारी सलाह देती थीं। मैं हमेशा उनकी नकल करती थी, क्योंकि वह मेरी आदर्श थीं और अब भी हैं। यह दिखाता है कि कैसे छोटी बहन को बड़ी बहन के अनुभवों से सीखने और गलतियों से बचने का अवसर मिला, जिससे मीरा को अपने करियर की शुरुआत में ही एक मजबूत नींव मिली।

गौरतब है कि पेशेवर टेनिस में एंड्रीवा बहनों ने कभी भी प्रतिस्पर्धा को अपने रिश्ते पर प्रभाव डालने नहीं होने दिया। मीरा ने जोर देकर कहा, हम कभी भी एक-दूसरे के साथ सच में प्रतिस्पर्धी नहीं थीं। हमारे माता-पिता हमेशा हमसे कहते थे कि हम बहनें हैं, इसलिए हम जिंदगी में सबसे करीबी लोग हैं, और हमें हमेशा एक-दूसरे का समर्थन करना करना चाहिए। उन्होंने यह भी बताया कि वे साथ में ज्यादा अभ्यास नहीं करती थीं, क्योंकि इससे गड़बड़ हो जाती थी। मीरा ने विस्तार से बताया कि इससे उन्हें गुस्सा आता, फिर एरिका को दुख होता कि वह गुस्सा है, और फिर मीरा को दुख होता कि एरिका दुखी है, जिससे कोर्ट पर एक तनावपूर्ण माहौल बन जाता। इस तरह उन्होंने अपने रिश्ते को पेशेवर दबाव से अलग रखने में सफलता पाई।

एवीसी महिला वॉलीबाल कॉटिनेंटल चैम्पियनशिप के क्वार्टर फाइनल में भाग लेती हुई चीनी और वियतनामी टीम की खिलाड़ी।

विश्व कप में पांचवें स्थान पर रही भारतीय महिला हॉकी टीम

को 50 लाख का इनाम मिलेगा, हॉकी इंडिया के प्रमुख दिलीप टिर्की ने की घोषणा

एमस्टेलवीन (ए)। भारतीय महिला हॉकी टीम नीदरलैंड्स में आयोजित एफआइएच हॉकी विश्व कप 2026 में पांचवे स्थान पर रही। ये भारतीय टीम का अब तक के अपने सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शनों में से एक है। इस ऐतिहासिक उपलब्धि पर हॉकी इंडिया ने टीम को 50 लाख रुपये का इनाम देने की घोषणा की है। सलिमा टेटे की कप्तानी में भारतीय टीम अब तक की दूसरी सबसे अच्छी रैंकिंग हासिल की है। इससे पहले 1974 के उद्घाटन संस्करण में भारतीय टीम चौथे स्थान पर रही थी।

भारतीय टीम ने पांचवें-छठे स्थान के लिए हुए क्लासिफिकेशन मुकाबले में विश्व की नंबर-5 टीम जर्मनी को रोमांचक मुकाबले में 3-1 से हराकर पांचवां स्थान हासिल किया। इस पूरे

टूर्नामेंट में भारतीय टीम का प्रदर्शन काफी अच्छा रहा और वह डच टीम नीदरलैंड से ही एक मैच हारी। भारतीय टीम ने इस टूर्नामेंट में इंग्लैंड और ऑस्ट्रेलिया जैसी बेहतर रैंकिंग वाली टीमों को भी कड़ी टक्कर दी। चीन, इंग्लैंड और ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ उसके मैच ड्रॉ रहे जबकि दक्षिण अफ्रीका को उसने 6-1 से हराया। भारतीय टीम ने अपने अंतिम मैच में जर्मनी पर जीत हासिल की।

जर्मनी ने मुकाबले की शुरुआत से ही हमले शुरु कर दिये। शुरुआती दो क्वार्टर में उन्होंने भारतीय डिफेंस पर लगातार दबाव बनाए रखा और कई हमले किये पर भारतीय टीम ने विफल कर दिये। वहीं दूसरे हाफ में मुकाबला कड़ा रहा।

विश्वकप : भारतीय पुरुष हॉकी टीम आठवें स्थान पर रही

शूटआउट में बेल्जियम के हाथों 4-3 से हारी

बेल्फियस (ए)। भारतीय पुरुष हॉकी टीम बेल्जियम के बेल्फियस हॉकी एरिना में हुए एफआईएच हॉकी विश्वकप 2026 में मेजबान टीम के हाथों हार के साथ ही आठवें स्थान पर रही। यहां 7वें-8वें स्थान के लिए हुए मुकाबले में बेल्जियम ने भारतीय टीम को शूटआउट में 4-3 से हराया। इस मुकाबले में निर्धारित समय तक दोनों ही टीमें 3-3 से बराबरी पर थीं परन्तु अंत में शूटआउट में बेल्जियम ने मुकाबला जीत लिया। मेजबान टीम के खिलाफ हुए मुकाबले में भारतीय टीम की शुरुआत अच्छी रही। अभिषेक ने छठे मिनट में ही एक कठिन मैदानी गोल दागकर टीम को 1-0 की शुरुआती बढ़त दिला दी। वहीं मेजबान बेल्जियम ने भी आक्रामक रुख अपनाकर पलटवार किया। भारतीय

गोलकीपर सूरज करकेरा ने हेंड्रिक्स के ड्रैग-फ्लिक को शानदार तरीके से रोककर गोल बचाये रखा पर बेल्जियम के हमले जारी रहे। भारत को तब एक झटका लगा जब निर्धारित संख्या से अधिक खिलाड़ी मैदान पर होने के कारण कप्तान हरमनप्रीत सिंह को पीला कार्ड दिखाया गया, जिससे टीम को कुछ समय के लिए 10 खिलाड़ियों के साथ खेलना पड़ा। इसका लाभ उठाते हुए बेल्जियम ने दूसरे क्वार्टर में गोल दागकर बराबरी हासिल कर ली। ये गोल रोमन डुवेकोट ने 22वें मिनट में किया जिससे स्कोर 1-1 से बराबरी पर आ गया। इसके बाद ह्यूगो लाबूशेयर ने पेनल्टी कॉर्नर पर गोल दागकर मेजबान टीम को 2-1 की बढ़त दिला दी।

सड़कों पर आवारा पशुओं का कब्जा, नगर निगम की नींद नहीं खुली!

करोड़ों के बजट और बड़े-बड़े दावों के बीच ग्वालियर की सड़कों पर जिंदगी से खिलवाड़, हादसों का कारण बन रहे पशुओं पर नगर निगम की कार्रवाई सवालों के घेरे में

अचलेश्वर एक्सप्रेस

ग्वालियर। शहर की सड़कों पर इन दिनों यातायात के सामने सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक आवारा पशु बन चुके हैं। ग्वालियर की शायद ही कोई ऐसी सड़क, गली, चौराहा या मुख्य मार्ग हो जहां सड़क पर बैठे या घूमते आवारा पशु नजर न आएं। कहीं पशुओं का झुंड सड़क के बीचों-बीच बैठा दिखाई देता है तो कहीं अचानक वाहन के सामने आ जाने से वाहन चालक को ब्रेक लगाना पड़ता है। दोपहिया वाहन चालकों के लिए तो यह स्थिति और भी खतरनाक है। सवाल यह है कि जब आवारा पशुओं को पकड़ने और नियंत्रित करने की जिम्मेदारी नगर निगम की है, तो फिर शहर की सड़कों पर यह समस्या लगातार बढ़ती क्यों जा रही है? नगर निगम के पास अमला है, संसाधन हैं, बजट है और जिम्मेदारी भी तय है, लेकिन जमीन पर तस्वीर इसके बिल्कुल उलट दिखाई देती है। शहर के नागरिकों को यह समझ नहीं आ रहा कि आखिर नगर निगम की वह व्यवस्था कहां है जो सड़कों से इन पशुओं को हटाने के लिए बनाई गई है। क्या नगर निगम किसी बड़े हादसे का इंतजार कर रहा है? क्या किसी नागरिक की जान जाने के बाद जिम्मेदारी तय होगी? शहर में सफाई और यातायात व्यवस्था को लेकर बैठकों में तमाम दावे किए जाते हैं, लेकिन सड़कों पर घूमते आवारा पशु इन दावों की हकीकत सामने ला देते हैं। जनता का सवाल सीधा है–यदि व्यवस्था मौजूद है तो उसका असर दिखाई क्यों नहीं देता?

नेताओं की जी-हुजूरी में आगे, जनता की परेशानी में पीछे क्यों?

आका नेता शहर में आते हैं तो अधिकारियों का अमला दौड़ पड़ता है, लेकिन सड़क पर हादसे का खतरा बन रहे आवारा पशुओं के लिए वही तत्परता आखिर कहां चली जाती है? नगर निगम के अधिकारियों की कार्यप्रणाली को लेकर भी अब सवाल उठने लगे हैं। शहर में किसी बड़े नेता का कार्यक्रम हो, कोई वीआईपी दौरा हो या कोई बड़ा आयोजन–व्यवस्था के नाम पर अधिकारी और कर्मचारी मौके पर पहुंच जाते हैं। सड़क से लेकर कार्यक्रम स्थल तक व्यवस्था को चाक-चौबंद करने में पूरी मशीनरी सक्रिय नजर आती है। लेकिन आम नागरिक रोज जिन समस्याओं से जूझ रहा है, उन पर इतनी तत्परता दिखाई नहीं देती। यही वजह है कि जनता के बीच यह धारणा मजबूत होती जा रही है कि अधिकारियों की सक्रियता आम जनता की परेशानी के हिसाब से नहीं, बल्कि रसूख और पहुंच के हिसाब से तय होती है। सवाल यह नहीं कि नेताओं की व्यवस्था क्यों की जाती है, सवाल यह है कि आम आदमी की सुरक्षा के लिए वैसी ही गंभीरता क्यों नहीं दिखाई जाती? नेता आते हैं तो अधिकारी आगे-पीछे नजर आते हैं, लेकिन आवारा पशुओं से परेशान जनता अधिकारियों को सड़क पर ढूंढती रह जाती है। नगर निगम को यह बताना चाहिए कि शहर में आवारा पशुओं को नियंत्रित करने के लिए प्रतिदिन कितनी कार्रवाई होती है और उसका परिणाम क्या है।

शहर का कोई कोना अछूता नहीं, सड़कें बनीं पशुओं का ठिकाना और जिम्मेदार विभाग बना मूकदर्शक

ग्वालियर में आवारा पशुओं की समस्या अब किसी एक इलाके तक सीमित नहीं रह गई है। छोटे मोहल्लों की गलियों से लेकर बाजारों और मुख्य सड़कों तक जगह-जगह पशु घूमते दिखाई देते हैं। कई स्थानों पर तो सड़क के बीच पशुओं के झुंड को देखकर ऐसा लगता है जैसे सड़क वाहन चलाने के लिए नहीं बल्कि पशुओं के बैठने के लिए छोड़ दी गई हो। दुकानदारों और स्थानीय लोगों के लिए भी यह परेशानी का कारण है। यातायात बढ़ने के समय समस्या और गंभीर हो जाती है। सुबह और शाम के व्यस्त समय में सड़क पर बैठे पशुओं के कारण वाहन चालकों को रास्ता बदलना पड़ता है। इसके बावजूद नगर निगम की स्थायी व्यवस्था जमीन पर दिखाई नहीं देती। यदि अधिकारी नियमित रूप से शहर का निरीक्षण करें तो उन्हें किसी रिपोर्ट या शिकायत की जरूरत ही नहीं पड़ेगी–समस्या आंखों के सामने दिखाई देगी। जरूरत केवल कार्रवाई की है।

आवारा पशु बने यातायात के 'ब्रेक', हर दिन बढ़ रहा हादसे का खतरा

सड़क के बीच बैठे पशु रोकते हैं रफ्तार, अचानक दौड़ते पशु कराते हैं ब्रेक, दोपहिया वाहन चालक सबसे ज्यादा जोखिम में ग्वालियर की यातायात व्यवस्था पहले ही कई चुनौतियों से जूझ रही है और ऐसे में सड़कों पर घूमते आवारा पशु समस्या को और गंभीर बना रहे हैं। मुख्य मार्गों पर बैठे पशुओं के कारण वाहन चालकों को अचानक दिशा बदलनी पड़ती है। कई बार वाहन चालक पशु को बचाने के प्रयास में दूसरी लेन में चला जाता है, जिससे पीछे से आ रहे वाहनों के साथ टक्कर का खतरा पैदा हो जाता है। दोपहिया वाहन चालकों के लिए स्थिति और भी गंभीर है, क्योंकि अचानक सामने आए पशु से बचने के दौरान संतुलन बिगड़ने की संभावना रहती है। रात के समय यह खतरा कई गुना बढ़ जाता है। सड़क पर बैठे पशु अंधेरे में दूर से दिखाई नहीं देते और तेज रफ्तार वाहन चालक के सामने अचानक स्थिति पैदा हो जाती है। शहर में यातायात सुचारू रखने के लिए ट्रैफिक पुलिस लगातार मेहनत करती है, लेकिन सड़क पर मौजूद आवारा पशु पूरी व्यवस्था को प्रभावित कर देते हैं। सवाल फिर नगर निगम से है–जब यह समस्या रोज दिखाई देती है तो इसका स्थायी समाधान क्यों नहीं किया जाता? आखिर कब तक वाहन चालक अपनी जान जोखिम में डालकर सड़कों से गुजरते रहेंगे?

नगर निगम मुख्यालय में बैठकर 'हवा' खाने से नहीं सुधरेगा शहर का यातायात

नगर निगम के अधिकारियों को कभी अपने वातानुकूलित कार्यालयों से बाहर निकलकर शहर की सड़कों पर भी उतरना चाहिए। फाइलों में व्यवस्था देखने और जमीन पर व्यवस्था देखने में बहुत अंतर होता है। मुख्यालय में बैठकर यदि अधिकारी रिपोर्टों के आधार पर यह मान लें कि शहर में सब कुछ ठीक है, तो उन्हें एक बार व्यस्त चौराहे पर खड़े होकर वास्तविकता देखनी चाहिए। गर्मी में तपती सड़क हो, बारिश में जलभराव वाली सड़क हो या सर्दी की सुबह–आम नागरिक इन्हीं परिस्थितियों में शहर की सड़कों से गुजरता है। अधिकारी भी कभी सड़क पर खड़े होकर देखें कि एक आवारा पशु किस तरह पूरे यातायात की रफ्तार रोक देता है। देखें कि दोपहिया वाहन चालक अचानक पशु सामने आने पर कैसे ब्रेक लगाता है। देखें कि पीछे से आने वाले वाहनों की लाइन कैसे बनती है। नगर निगम के अधिकारियों को वातानुकूलित कमरों से निकलकर जमीन की गर्मी महसूस करनी होगी। शहर की जनता को भाषण नहीं, कार्रवाई चाहिए। जिस समस्या को अधिकारी रोज अपनी गाड़ी की खिड़की से देखते हैं, उसे फाइलों में दबाने के बजाय सड़क पर उतरकर खत्म करने की जरूरत है। आखिर जिम्मेदारी जनता की नहीं, नगर निगम की है।

धूप हो, बारिश हो या कड़ाके की ठंड–सड़क पर डटी रहती है ट्रैफिक पुलिस

निगम की लापरवाही के बीच यातायात संभालने में जुटे ट्रैफिक पुलिसकर्मी, लेकिन आवारा पशुओं की समस्या का स्थायी समाधान निगम को ही करना होगा

ग्वालियर की यातायात व्यवस्था को संभालने में ट्रैफिक पुलिस की भूमिका को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। तेज गर्मी में तपती सड़कों पर खड़े होकर, बारिश में भीगते हुए और कड़ाके की ठंड में भी ट्रैफिक पुलिसकर्मी चौराहों पर अपनी ड्यूटी निभाते नजर आते हैं। वीआईपी मूवमेंट हो, त्योहारों का दबाव हो, बाजारों में भीड़ हो या अचानक यातायात का दबाव बढ़ जाए–ट्रैफिक पुलिसकर्मी सड़क पर मौजूद रहकर व्यवस्था को नियंत्रित करने का प्रयास करते हैं। लेकिन पुलिस भी आखिर कितना संभाले? यदि सड़क पर लगातार आवारा पशु मौजूद रहेंगे तो यातायात व्यवस्था प्रभावित होना स्वाभाविक है। ट्रैफिक पुलिस वाहन चालकों को नियंत्रित कर सकती है, जाम खुलवा सकती है और यातायात नियमों का पालन करा सकती है, लेकिन आवारा पशुओं को पकड़कर सुरक्षित स्थान तक पहुंचाने की मूल जिम्मेदारी नगर निगम की व्यवस्था से जुड़ी है। इसलिए नगर निगम को ट्रैफिक पुलिस के प्रयासों का सहयोगी बनना होगा, अतिरिक्त बोझ नहीं। शहर की जनता चाहती है कि पुलिस की मेहनत का परिणाम सड़क पर दिखाई दे और इसके लिए नगर निगम को अपनी जिम्मेदारी ईमानदारी से निभानी होगी।

राखी के धागे ने बांधे रिश्ते, अपनों से दूर चेहरों पर खिली मुस्कान

कलेक्टर रुचिका चौहान ने मंगलधाम वृद्ध आश्रम पहुंचकर बुजुर्गों के साथ मनाया रक्षाबंधन, निभाया अपनत्व का रिश्ता

अचलेश्वर एक्सप्रेस

ग्वालियर। रक्षाबंधन सिर्फ भाई-बहन के रिश्ते का पर्व नहीं, बल्कि उन दिलों तक पहुंचने का अवसर भी है, जिन्हें स्नेह, सम्मान और अपनत्व की सबसे ज्यादा जरूरत है। ग्वालियर में इस भावना को साकार करते हुए कलेक्टर श्रीमती रुचिका चौहान ने रक्षाबंधन का पर्व अपनों से दूर रह रहे बुजुर्गों के बीच पहुंचकर मनाया।

नेहरू कॉलोनी, थाटीपुर स्थित मंगलधाम वृद्ध आश्रम में कलेक्टर रुचिका चौहान के पहुंचते ही बुजुर्गों के चेहरों पर खुशी साफ नजर आई। वे अपने साथ मिठाइयां और उपहार लेकर पहुंचीं तथा आश्रम में रह रहे बुजुर्गों की कलाइयों पर स्नेहपूर्वक राखी बांधकर उन्हें रक्षाबंधन की शुभकामनाएं दीं।

लंबे समय से परिवार और अपनों से दूर रह रहे बुजुर्गों के लिए कलेक्टर का यह आत्मीय व्यवहार किसी खास तोहफे से कम नहीं था। राखी के धागे के साथ मिले स्नेह और सम्मान ने आश्रम का माहौल भावुक और पारिवारिक बना दिया। बुजुर्गों के चेहरों पर आई मुस्कान ने इस पहल की सार्थकता बयां कर दी। इस दौरान एसडीएम मुरार नरेश चंद्र गुप्ता और तहसीलदार कुलदीप दुबे भी मौजूद रहे। अधिकारियों ने भी आश्रम में रह रही बहनों से राखियां बंधवाईं और उन्हें उपहार भेंट कर शुभकामनाएं दीं।

कलेक्टर की पहल बनी संवेदना की मिसाल

कलेक्टर रुचिका चौहान की पहल पर जिला प्रशासन के अन्य अधिकारियों ने भी विभिन्न आश्रमों और बालिका संरक्षण गृहों में पहुंचकर रक्षाबंधन मनाया। अपर कलेक्टर अनिल बनवारिया जेएएच परिसर स्थित मां कैला देवी बालिका गृह पहुंचे, जहां बालिकाओं ने उन्हें राखी बांधी। उन्होंने बालिकाओं के साथ समय बिताकर उपहार भेंट किए। वहीं तहसीलदार महेश कुशवाह ने भी बालिकाओं से राखियां बंधवाईं और उन्हें रक्षाबंधन की शुभकामनाएं दीं। कलेक्टर रुचिका चौहान की इस पहल ने यह संदेश दिया कि प्रशासन केवल सरकारी दफ्तरों और फाइलों तक सीमित नहीं है, बल्कि जरूरत के समय समाज के उन लोगों के बीच भी खड़ा है, जिन्हें अपनत्व की आवश्यकता है। राखी के इन धागों ने एक बार फिर साबित किया कि रिश्ते सिर्फ खून से नहीं, बल्कि संवेदना, सम्मान और सच्चे अपनत्व से भी बनते हैं। अपनों से दूर बुजुर्गों और बालिकाओं के बीच पहुंचकर जिला प्रशासन ने रक्षाबंधन को महज एक त्योहार नहीं रहने दिया, बल्कि उसे मानवीय संवेदना और भाईचारे की मिसाल बना दिया।

केंद्र से लेकर राज्यों तक सत्ता के गलियारों में बढ़ती 'अनौपचारिक सत्ता' पर सवाल

माननीय से ज्यादा माननीय के 'छर्रे'! खुद को पावर में समझने लगे

अचलेश्वर एक्सप्रेस

ग्वालियर। सत्ता के गलियारों में पद और प्रभाव के बीच की दूरी अक्सर इतनी कम दिखाई देती है कि कई बार यह तय करना मुश्किल हो जाता है कि वास्तविक सत्ता किसके पास है और सत्ता का प्रदर्शन कौन कर रहा है। लोकतांत्रिक व्यवस्था में अधिकार संवैधानिक पद और कानून से तय होते हैं, लेकिन राजनीति के आसपास कुछ ऐसे किरदार भी दिखाई देते हैं जिनके पास कोई आधिकारिक पद नहीं होता, फिर भी उनका रौब किसी पदाधिकारी से कम नजर नहीं आता। यही वे किरदार हैं जिन्हें राजनीतिक गलियारों की भाषा में तंज के साथ 'छर्रे' कहा जा सकता है।

नजदीकी को अधिकार समझने लगे 'छर्रे'

किसी माननीय के करीब होना अपने आप में कोई अपराध नहीं है। जनप्रतिनिधियों के साथ कार्यकर्ता, समर्थक और सहयोगी हमेशा रहते हैं। लेकिन परेशानी तब शुरू होती है जब कोई व्यक्ति राजनीतिक नजदीकी को अपना अधिकार समझने लगे। 'माननीय के आदमी हैं' जैसे परिचय को प्रभाव का हथियार बनाकर अधिकारियों पर रौब जमाना, अपने काम निकलवाना और दूसरों के काम में हस्तक्षेप करना लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए गंभीर संकेत है।

फोटो, फोन और नजदीकी से नहीं मिल जाता अधिकार

किसी माननीय के साथ फोटो खिंचवा लेना, फोन पर बातचीत कर लेना या राजनीतिक कार्यक्रमों में उनके साथ दिखाई देना किसी व्यक्ति को शासन का हिस्सा नहीं बना देता। नजदीकी सम्मान दे सकती है, पहचान दे सकती है, लेकिन संवैधानिक अधिकार नहीं। असली अधिकार कानून से आता है और असली ताकत जनता के विश्वास से।

'माननीय के आदमी' होने का दावा कितना खतरनाक?

जब कोई व्यक्ति अपने परिचय में सबसे पहले किसी माननीय का नाम लेकर अपना प्रभाव स्थापित करने लगे और फिर उसी नाम के सहारे अधिकारियों से लेकर जनता तक अपनी बात मनवाने की कोशिश करे, तो यह केवल व्यक्तिगत दबदबे का मामला नहीं रह जाता। इससे व्यवस्था में यह गलत संदेश जाता है कि नियम और प्रक्रिया से ज्यादा महत्वपूर्ण राजनीतिक पहुंच है। परिणाम यह होता है कि योग्य व्यक्ति प्रक्रिया में खड़ा रहता है और पहुंच का दावा करने वाला व्यक्ति दरवाजे के भीतर पहुंच जाता है।

सवाल भूमिका का नहीं, सीमा भूलने का है

हर राजनीतिक कार्यकर्ता, समर्थक या जनप्रतिनिधि का करीबी व्यक्ति 'छर्रा' नहीं होता। लोकतंत्र में राजनीतिक कार्यकर्ताओं और जनप्रतिनिधियों के सहयोगियों की अपनी महत्वपूर्ण भूमिका है। सवाल तब उठता है जब कोई व्यक्ति अपनी भूमिका की सीमा भूलकर अधिकारियों को प्रभावित करने लगे, जनता को गुमराह करे, फैसलों पर दबाव बनाने का दावा करे या राजनीतिक नजदीकी को कानून से ऊपर समझने लगे।

जनता के पक्ष में खड़ा होना ही असली राजनीति

राजनीति की असली ताकत दबदबा बनाने में नहीं, जनता के साथ खड़े होने में है। किसी अधिकारी को फोन करके डराने, किसी काम को नियमों से बाहर करवाने या किसी व्यक्ति पर राजनीतिक पहुंच का प्रभाव दिखाने में जनसेवा नहीं है। जनसेवा तब है जब कमजोर की आवाज व्यवस्था तक पहुंचे, काम नियम के अनुसार हो और किसी भी व्यक्ति को केवल पहुंच के आधार पर विशेषाधिकार न मिले।

अंतिम सवाल—माननीय के नाम की ताकत जनता के लिए या निजी फायदे के लिए?

सवाल सिर्फ उन लोगों से नहीं है जो खुद को 'माननीय का खास' बताकर पावर में समझने लगे हैं। सवाल उन माननीयों से भी है जिनके नाम का इस्तेमाल कहीं न कहीं हो रहा है। आखिर उनके नाम पर कौन अधिकारियों को प्रभावित कर रहा है? कौन जनता को गुमराह कर रहा है? कौन अपनी पहुंच का प्रदर्शन कर रहा है? और कहीं ऐसा तो नहीं कि किसी बड़े आर्थिक खेल में भी किसी माननीय के नाम का इस्तेमाल किया जा रहा हो, जबकि माननीय को इसकी भनक तक न हो? लोकतंत्र में किसी माननीय की नजदीकी सम्मान की बात हो सकती है, लेकिन वह शासन करने का अधिकार नहीं बन सकती। सत्ता का असली स्रोत न कोई 'छर्रा' है, न कोई दरबारी और न कोई निजी नजदीकी—सत्ता का असली स्रोत जनता है। इसलिए जो लोग माननीय के नाम को अपनी निजी ताकत समझ बैठे हैं, उन्हें यह याद रखना चाहिए कि लोकतंत्र में नाम से नहीं, अधिकार और जवाबदेही से ताकत तय होती है। और सभी माननीयों को भी अपने आसपास के लोगों पर विशेष नजर रखनी चाहिए कहीं उनके नाम का दुरुपयोग तो नहीं हो रहा। जनता के पक्ष में खड़े रहना और अपने नाम का गलत इस्तेमाल करने वालों के खिलाफ सख्त होना ही किसी जनप्रतिनिधि की वास्तविक राजनीतिक जिम्मेदारी है।

'छर्रों' की अनौपचारिक सत्ता पर लगाम जरूरी

लोकतंत्र में सत्ता के समानांतर कोई अनौपचारिक सत्ता केंद्र खड़ा नहीं होना चाहिए। यदि किसी व्यक्ति के पास पद नहीं है, जिम्मेदारी नहीं है और निर्णय लेने का अधिकार नहीं है, तो उसे केवल राजनीतिक नजदीकी के आधार पर व्यवस्था को प्रभावित करने का अधिकार भी नहीं हो सकता। यही लोकतांत्रिक मर्यादा है और यही प्रशासनिक व्यवस्था की मजबूती की पहली शर्त है।

अधिकारियों को गुमराह करने का खेल

ऐसे किरदारों की सबसे बड़ी ताकत अक्सर उनका पद नहीं, बल्कि किसी बड़े नाम से अपनी नजदीकी का दावा होता है। फोन, सिफारिश और दबाव के जरिए अधिकारियों को प्रभावित करने की कोशिश की जाती है। कई बार अधिकारी भी इस भ्रम में पड़ सकते हैं कि सामने वाला व्यक्ति वास्तव में किसी बड़े निर्णय केंद्र का हिस्सा है। यहीं से व्यवस्था में भ्रम पैदा होता है और नियम-कायदे के बजाय कथित पहुंच को महत्व मिलने लगता है।

जनता को भी 'माननीय के नाम' पर गुमराह किया जाता है

सबसे गंभीर स्थिति तब बनती है जब यही प्रभाव जनता के बीच इस्तेमाल होने लगे। आम आदमी को यह भरोसा दिलाया जाता है कि 'काम हो जाएगा', 'ऊपर तक बात है' या 'माननीय से सीधे बात है'। इस तरह जनता को उम्मीद दिखाई जाती है और राजनीतिक पहुंच को सफलता की गारंटी के रूप में पेश किया जाता है। यदि किसी मामले में वास्तव में ऐसी गतिविधियां होती हैं तो यह केवल जनता के साथ छल नहीं, बल्कि संबंधित जनप्रतिनिधि की छवि के साथ भी खिलवाड़ है।

माननीयों को भी अपने आसपास के लोगों पर नजर रखनी होगी

यह बात सभी माननीयों के लिए एक गंभीर संदेश भी है। उनके आसपास कौन घूम रहा है, कौन उनके नाम का इस्तेमाल कर रहा है, कौन अधिकारियों को प्रभावित करने की कोशिश कर रहा है और कौन जनता के बीच उनकी राजनीतिक पहुंच को अपने निजी प्रभाव के लिए इस्तेमाल कर रहा है—इस पर नजर रखना जरूरी है। कई बार नेता की आलोचना उसके अपने फैसलों से कम और उसके आसपास घूमने वाले लोगों के व्यवहार से ज्यादा होने लगती है।

अपने नाम के दुरुपयोग पर माननीयों को होना होगा सख्त

यदि कोई व्यक्ति किसी माननीय के नाम का गलत इस्तेमाल करके अधिकारियों को गुमराह करता है, जनता को भ्रमित करता है या निजी लाभ हासिल करने की कोशिश करता है, तो संबंधित माननीय को ऐसे लोगों से दूरी बनाने के साथ-साथ उनके खिलाफ कार्रवाई का रास्ता भी अपनाना चाहिए। जनता के प्रतिनिधि का नाम किसी की निजी जागीर नहीं है। उस नाम से जनता का विश्वास जुड़ा होता है और उस विश्वास की रक्षा करना स्वयं जनप्रतिनिधि की जिम्मेदारी भी है।

माननीय के नाम पर करोड़ों का खेल? सवाल बेहद गंभीर

सत्ता के आसपास घूमने वाले कुछ लोगों पर यदि आरोप लगते हैं कि वे किसी माननीय के नाम और राजनीतिक पहुंच का इस्तेमाल करके बड़े आर्थिक लेन-देन को प्रभावित करते हैं, तो यह बेहद गंभीर विषय है। कहीं ऐसा तो नहीं कि माननीय के नाम पर करोड़ों रुपये इधर से उधर होने की संभावनाएं पैदा की जा रही हों और इसकी जानकारी स्वयं माननीय को भी न हो? ऐसे मामलों में बिना प्रमाण किसी व्यक्ति को दोषी ठहराना उचित नहीं, लेकिन यदि शिकायतें, दस्तावेज या लेन-देन के ठोस संकेत सामने आते हैं तो निष्पक्ष जांच जरूरी है। क्योंकि किसी बड़े नाम की आड़ में आर्थिक प्रभाव का इस्तेमाल लोकतांत्रिक संस्थाओं की विश्वसनीयता पर सीधा सवाल खड़ा करता है।

सत्ता किसकी जनता की या 'छर्रों' की?

सवाल सीधा है सत्ता उस व्यक्ति की है जिसे जनता ने चुना है, उस अधिकारी की जिसे कानून ने जिम्मेदारी दी है या उस 'छर्रे' की जो केवल राजनीतिक नजदीकी के दम पर खुद को पावर सेंटर समझने लगा है? लोकतंत्र में किसी नेता की राजनीतिक ताकत का अर्थ यह कतई नहीं कि उसके आसपास मौजूद हर व्यक्ति को शासन चलाने का अनौपचारिक अधिकार मिल जाए।

धारा-163 के तहत कलेक्टर ने जारी किया प्रतिबंधात्मक आदेश, सोशल मीडिया पर अफवाह और आपत्तिजनक सामग्री पर भी प्रशासन की नजर

बिना अनुमति रैली-जुलूस पर रोक, उल्लंघन पर होगी कार्रवाई

अचलेश्वर एक्सप्रेस

ग्वालियर। आगामी धार्मिक त्योहारों, सामाजिक आयोजनों और विभिन्न शासकीय व राजनीतिक कार्यक्रमों को देखते हुए जिला प्रशासन ने कानून-व्यवस्था और सांप्रदायिक सौहार्द बनाए रखने के लिए सख्ती बढ़ा दी है। कलेक्टर एवं जिला दंडाधिकारी श्रीमती रुचिका चौहान ने भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता-2023 की धारा-163 के तहत प्रतिबंधात्मक आदेश जारी किया है। आदेश तत्काल प्रभाव से लागू होकर दो माह तक प्रभावशील रहेगा। आदेश के मुताबिक जिले में किसी भी सार्वजनिक स्थल पर धरना, प्रदर्शन, रैली, जुलूस या चल समारोह बिना सक्षम अधिकारी की पूर्व अनुमति के आयोजित नहीं किया जा सकेगा। एक अनुविभाग की सीमा में होने वाले कार्यक्रम के लिए संबंधित एसडीएम तथा एक से अधिक अनुविभागों में कार्यक्रम होने पर एडीएम से अनुमति लेना अनिवार्य होगा।

सोशल मीडिया पर भी निगरानी

प्रशासन ने सोशल मीडिया सहित अन्य माध्यमों पर भी निगरानी बढ़ाने के निर्देश दिए हैं। किसी धर्म, जाति या संप्रदाय की भावनाओं को आहत करने वाली सामग्री, भ्रामक जानकारी, अफवाह या कानून-व्यवस्था प्रभावित करने वाले संदेशों के प्रसार पर कार्रवाई की जाएगी।

उल्लंघन पर BNS की धारा 223 में कार्रवाई

बाजारों, मॉल, सार्वजनिक मार्गों और भीड़भाड़ वाले क्षेत्रों में शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए पुलिस-प्रशासन सतत निगरानी करेगा। आदेश का उल्लंघन करने वालों के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता (BNS)-2023 की धारा 223 सहित अन्य प्रासंगिक धाराओं में दंडात्मक कार्रवाई की जाएगी। विशेष परिस्थितियों में सक्षम प्राधिकारी परीक्षण के बाद आवश्यक छूट दे सकेगा।

स्वामित्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक पूनम विश्वकर्मा एवं संपादक आकाश कुशवाह के लिए विश्वकर्मा प्रिंटिंग प्रेस, ग्राम पादरी, तहसील बैढ़न, जिला सिंगरौली, मध्यप्रदेश से मुद्रित व कुशवाह मोहल्ला, ग्राम पंचायत सोजना, पोस्ट-तिघरा, ग्वालियर, मध्यप्रदेश - 474001 से प्रकाशित मोबाइल नं. 84355 00216 संपादक- आकाश कुशवाह (सभी प्रकार के विवादों के लिए न्याय क्षेत्र ग्वालियर रहेगा।)